CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[illegible] ६२/९८

मृदंग तबला प्रभाकर

२.२

[illegible]नाथ-ग्रन्थालय,
[illegible], [illegible]
वाराणसी-५

[illegible]न्थालय
[illegible] वाराणसी-५
[illegible] : २/९८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आ: 2/98
आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

प्रस्तावना

आदरणीय विद्वानों तथा प्रेमी पाठकगण !

अखिल भुवन भर्ता, भयहर हर्ता सचराचरेश श्री कनक भवन बिहारी को मैं धन्यवाद देता हूं, कि जिनकी असीम अनुकम्पा से "मृदंग तबला प्रभाकर" प्रकाशित कराने का शुभावसर प्राप्त हुआ है। अस्तु यह लिखते हुये संकोच नहीं होता कि "संगीत कला" भारतीय संस्कृति की प्रधान कला है जो गगन चुम्बित अट्टालिकाओं से लेकर गरीबों की टूटी झोंपड़ियों में ही नहीं, अपितु जंगलों और पहाड़ों के निवासियों में भी पूर्णतयां गूंज रही है, जिसकी एक एक गति पर प्रकृति मुग्ध हो नाचा करती है। संगीत की मधुर ध्वनि हृदय वीणा के तारों को झंकरित कर देती है। इसकी निर्मलधारा सुर सरिता सी देव, यक्ष, किन्नर गंधर्व, नाग, मुनि, मानव, पशु पक्षी ही नहीं; नरभक्षी दानवों तक को आनन्दामृत पिलाकर उनके नीरस जीवन में सरसता भर देती है।

"साहित्य संगीत कला विहीनाः साक्षात् पशु पुच्छ विषाणहीनाः"

(भर्तृहरि)

किन्तु संगीत गायन, वादन, तथा नर्तन एक से नहीं, जब तीनों का समागम होता है, तभी आनन्द की त्रिवेणी प्रवाहित होकर जड़-जंगम जीवों को आनन्दधाम का मार्ग बताती है—

(गीतं वाद्यं तथां नृत्यं त्रयः संगीतमुच्यते)

इस व्याख्या से यह सिद्ध हो जाता है, कि संगीत का सही रूप गायन वाद्य एवं नृत्य तीनों के समागम से प्रकट होता है। शास्त्रकार ने अपने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लेख (गीतं वाद्यं तथा नृत्यं) में वाद्य शब्द को बीच में रखकर अपनी काव्य-कला का परिचय दिया है, तथा वाद्य कला ही सर्वप्रधान कला है साथ साथ इसका भी संकेत किया है, (इसे दीप देहरी न्याय कहते हैं), तात्पर्य यह है कि वाद्य के बिना गायन तथा नृत्य दोनों ही अशोभित हैं।

वाद्य चार प्रकार के हैं—(जैसे तत, वितत, घन, सुषिर) इन चारों वाद्यों में मृदंग ही सर्वप्रधान है जैसा महान तानसेन ने कहा है-(साजन-पति मृदङ्ग) मृदंग जिस प्रकार संसार के सभी वाद्यों में महान है, उसी प्रकार उसे प्राप्त करने में तीक्ष्ण बुद्धि, एवं महान परिश्रम की आवश्यकता है। वर्तमान समय में इतना परिश्रम असाध्य है, सम्भवतः यही सोचकर पूर्वाचार्यों ने मृदंग को दो भागों में विभक्त करके तबला (दायां बायां) का रूप दे दिया। यद्यपि तबला कर्णप्रिय है, मधुर है, लय, बोल ताल में मृदंग जैसा ही इसका भी भण्डार भरा है तथापि मृदंग की वह शक्तियां न प्राप्त कर सका, जिससे मतवाला हाथी वश में हो गया था, मयूर नाचने लगे थे। इतना ही नहीं बादल भी पानी बरसाने लगते थे। अस्तु, बड़ों ने ऐसा भी कहा है कि समय परिवर्तनशील है जिस में उलट फेर हुआ ही करता है! मैं श्री भगवानदास जी मृदंगाचार्य, श्री ठाकुर दास जी मृदंगाचार्य, श्री राम मोहनी शरण जी मृदंगाचार्य, श्री पं सन्तशरण जी "मस्त" संगीताचार्य, तथा स्वर्गीय श्री नैपालसिंह जी (तबला की शिक्षा मैंने इन्हीं से प्रारम्भ की थी) का आभारी हूं जिनकी कृपा से "मृदंग तबला प्रभाकर" प्रकाशित हुआ है। इससे पाठकों का लाभ हो सका तो अपने को कृतार्थ समझूंगा। यदि कुछ त्रुटि रह जाय तो क्षमा प्रार्थी हूं।

संत हंस गुण गहिह पय, परि हरि वारि विकार।

अकिंचन :—
पागलदास

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गुरु शिष्य सम्वाद

शिष्यः—ठेका किसे कहते हैं ?

गुरुः—ठेका गायन की नींव है, जो कुछ वर्णों को साथ लेकर मण्डलाकार घूमता है।

शिष्यः—आदि ताल किसे कहते हैं ?

गुरुः—धीमा [illegible] को [illegible] आदि ताल कहते हैं।

शिष्यः—गत किसे कहते हैं ?

गुरुः—जो उंगलियों द्वारा चांट (किनारी) पर बजता है। गतें कई प्रकार की होती हैं।

शिष्यः—मुखड़ा, तोड़ा, तिहाई में क्या अन्तर है ?

गुरुः—नामान्तर के अतिरिक्त रूपान्तर तो कुछ नहीं दीखता, सम्भवतः जिसे पूर्वीय तोड़ा, तथा उत्तरप्रदेशीय तिहाई कहते हैं, उसे ही दक्षिणीय मुखड़ा कहते हैं। अब तो इन शब्दों का सभी जगह प्रचार है।

शिष्यः—लड़ी लग्गी से क्या तात्पर्य है ?

गुरुः—[illegible] हैं जिस में (घिन तिट घिनान) आदि वर्ण पड़ते हैं 'लड़ी' है और जिसमें (धाड़ा नाड़ा) का विशेष प्रयोग होता है वह लग्गी है। किन्तु मेरे विचारानुसार यह गुणियों की रीझ है, जैसे किसी बोल के गुण (लय शब्द, चाल) पर रीझकर, पेशकार, शिकस्त, लालक़िला, चारबाग़, गांस तितव्वी, फूलझड़ी, लतीफ़ा, गत, गुम्वद आदि नामकरण कर देते हैं ? इनके नाम की पद्धति शास्त्रीय नहीं है, सम्भवतः तबला के साथ २ इन नामों का भी प्रादुर्भाव हुआ है, और धीरे २ हो रहा है। इसमें लेखकों के मत नहीं मिलते।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शिष्यः—मोहरा किसे कहते हैं ?

गुरुः—मोहरा और मुखड़ा का अर्थ एक है किन्तु मोहरे को मुखड़े से कुछ विस्तृत करके गुणियों ने अन्तर कर दिया है ।

शिष्यः—पड़ाल, तथा रेला में क्या अन्तर है ?

गुरुः—पड़ाल का दूसरा नाम रेला है, जो रेलगाड़ी की चाल पर आधारित है, अर्थात् पड़ाल का विस्तृत रूप लघु होकर रेला नाम से प्रख्यात हुआ है ।

शिष्यः—इन दोनों का रूपक क्या है ?

गुरुः— दोहा-धिट तिट धुमकिट आदि में, करि अणुद्रुत गति चाल ।
पुनि आवे पुनि चल पड़े, तको कहिय पड़ाल ॥
"पागलदास"

शिष्यः—परन किसे कहते हैं ?

गुरुः—परन चार प्रकार के होते हैं—बोल परन, साथ परन, गत परन, काल परन, अर्थात परन बहुवाचक शब्द है । कुछ लोगों का कथन है यथा—

दोहा—उघट करन नाना लयें, होय घनाक्षर वर्ण ।
धर्मक धमक धधक्कार गत ताको कहियत पर्ण ॥
(यमुना चौ० मृदङ्गाचार्य विहार द्वारा प्राप्त)

शिष्यः—साथ करने का क्या नियम है ?

गुरुः—गायक के अनुकूल बजना, जिससे चित्त पर गायन, वादन, नर्तन का असर पड़े । नहीं तो गायक अयोध्या के मन्दिरों में घूम रहा हो और वादक बम्बई के सिनेमा हाल मे फिर सहयोग कहां और बिना सहयोग आनन्द कहां ? वस्तुतः इन्हें आपस में सहयोगी तथा साथी जैसा व्यवहार करना चाहिये, तभी आनन्द प्राप्त होता है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शिष्यः—अच्छा ताल का क्या रूपक है ?

गुरुः—'ता' भगवान भूतनाथ के "ताण्डव" से और 'ल' महाशक्ति श्री पार्वती के "लास्य" नृत्य से अवतरित होकर "ताल" शब्द बना है तथा व्याकरण के अनुसार ताल इस प्रकार सिद्ध होता है—

श्लोक—तालस्तल प्रतिष्ठायामिति धातोर्घत्रि स्मृतः।
गीतं वाद्यं तथा नृत्यं यत्सताले प्रतिष्ठितम् ॥

(संगीत रत्नाकर)

वत्स ! ताल वह स्तम्भ है, जिस पर गायन वादन तथा नर्तन तीनों अवलम्बित हैं, चाहे उक्त तीनों विषयों का आचार्य क्यों न हो जाय, किन्तु ताल का कच्चा है, तो उसका सारा परिश्रम व्यर्थ है। (लवण बिना बहु व्यंजन जैसे) अर्थात् ताल संगीत का प्राण है, जैसा शास्त्रकारों ने लिखा है—

श्लोक—गंधर्व मार्ग कुशलः कास्य ताल धरोपरः।
गातुः सहायकर्ता स्यात् प्रमाद विनिवृत्तये ॥

अर्थात् संगीतज्ञ कितना भी कुशल क्यों न हो, किन्तु उससे भूल होना स्वाभाविक है। ताल का पक्का होने पर भूल हो ही नहीं सकती, और यदि हो भी गई तो उसका शीघ्र सुधार हो जाता है। अब ताल के दस प्राणों की व्याख्या सुनो—

श्लोक—कालः मार्ग क्रियांगानि ग्रह जाति कलालयः।
यति प्रस्तारे कोंचित ताल प्राण दशास्मृतः ॥

(१) काल—ताल देते समय जो हाथ के संयोग वियोग में समय लगता है, उसे काल कहते हैं, तत्पश्चात ही काल की सीमा निर्धारित होती है।

(२) मार्ग—मार्ग का शब्दार्थ है रास्ता, प्रणाली नियम आदि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मार्ग चार प्रकार के होते हैं। १ ध्रुव मार्ग २ धार्तिक मार्ग ३ चित्र मार्ग ४ दक्षिण मार्ग।

(३) क्रिया—करने को कहते हैं। ताल की क्रियायें दो प्रकार की होती हैं सशब्द (शब्द सहित) निःशब्द (शब्द रहित) इन दोनों के अन्तर्गत चार चार क्रियायें और हैं, यथा—

सशब्द की क्रियायें—

(१) ताली लगाने के लिये हाथ नीचे करने को (ध्रुव) कहते हैं।

(२) दोनों हाथों के संयोग को (शम्पा) कहते हैं।

(३) दोनों हाथों के शब्द को (ताल) कहते हैं।

(४) हाथों से सामने ताली लगाने को (सन्निपात) कहते हैं।

निशब्द की क्रियायें—

(१) दाहिना हाथ नीचे करने को (आवाध)

(२) सम हाथ रखने को (निष्काम)

(३) हाथ बगल हटाने को (विक्षेप)

(४) क्रिया समाप्त करने को (प्रवेशक)

(४) अंग—अर्थात् भाग। जैसे तीन ताल में चार भाग हैं

+	२	०	३
१,२,३,४	५,६,७,८	९,१०,११,१२	१३,१४,१५,१६

(अंग सब तालों में होते हैं)

(५) जाति—जाति लय की चाल को कहते हैं। जाति पांच प्रकार की होती हैं। चतुस्र (३ ताल ४ ताल) तिस्र (दादरा) मिश्र (धमार, जत) खण्ड (झपताल) संकीर्ण में (९-११-१५) फुटकर मात्रायें रहती हैं।

(६) ग्रह—ताल के प्रारम्भ स्थान को ग्रह कहते हैं। ग्रह चार प्रकार के हैं। सम (धा धीं धीं धा) विषम (ऽ: धा धीं धा)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अतीत (आ आ धीं धा) अनागत (आ आ आ धा)। इस में कोई अन्य रूप भी दर्शाते हैं।

(७) कला—कला के विषय में भी मतान्तर हैं। किसी ने लिखा है कला नाम अंक का है, कोई कहता है कि प्रत्येक दो मात्राओं के बीच में चार चार कलाओं का निवास है, और किसी का मत है कि बैठना, मुखाकृति, हथौटी, को सुन्दर रखना ही कला है, अस्तु उक्त बातें सभी उपयोगी हैं इसलिये (को बड़ छोट कहे अपराधू)

(८) लय—दो मात्राओं की वीच को लय कहते हैं, लय तीन प्रकार की है, द्रुत, मध्य, विलम्वित, यथा:—

श्लोक—द्रुतो मध्य विलम्वश्च द्रुतः शीघ्रतमो मतः।
द्विगुण द्विगुणौ ज्ञेयो तस्मान् मध्य विलम्वितौ॥

अर्थात् विलम्वित के द्रुत (दून) को मध्य कहते हैं, और मध्य की द्रुत को अणु द्रुत (चौगुन) कहते हैं ? तीनों लयों को रूप, न्यूनाधिक होने से बनता है। एवं

लय शोणित वपु ताल में, मात्रा नाड़ी जान।
त्वच आघात प्रमानिये, कहत सबै बुधिमान॥ "पागलदास"

अर्थात्, ताल रूपी शरीर में लय रक्त है, मात्रायें नाड़ी हैं, आघात चर्म है ऐसा बुद्धिमान कहते हैं।

(९) यति—(लयः प्रवक्तिर्नियमो यतिरित्यभिधीयते)

अर्थात् लय की गति (जो बोलों में बंधी रहती है) दिखलाने को कहते हैं। यति पांच प्रकार की होती है, समा गोपूच्छा, पीपिलका मृदंगा, स्रोतागताः इनका सम्पर्क किन्हीं २ परणों के साथ होता है, जो मृदंगाध्याय में मिलेगा।

(१०)-प्रस्तार—प्रस्तार का तात्पर्य विस्तार से है। किसी भी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उचित बोल को अपने अनुभव द्वारा विस्तृत करे, अथवा किसी भी ताल में ठेका बांधकर उसमें अन्य बोलों को बजाता हुआ सम पर आजावे।

शिष्य:—मृदंग, तबला सीखने में पहले ठेका सीखना चाहिये या क़ायदा ?

गुरु:—क़ायदा। कारण जबतक क़ायदे से अंगुली नियंत्रित नहीं होतीं, तबतक ठेके का सही रूप नहीं आसकता ! हां, ठेके का मौखिक ज्ञान होना आवश्यक है।

शिष्य:—मृदंग तबला में कितने वर्ण हैं, किन २ स्थानों से निकलते हैं

गुरु:—मृदगा तबला दोनों में सात २ वर्ण ही प्रधान हैं। अन्य इनके प्रतिनिधि के अधिकार में बजते हैं। वे सातों वर्ण ये हैं, (ता, दी, ना, ते, टे, घ, क(ता, दी, ना दाहिने में खुले और तो, टी, बन्द बजते हैं। बायें में घ, खुला और क, बन्द बजता है (जिस में आस दब जाये) इन सातों में दाहिने का ट, और बायें का घ, दोनों अचल वर्ण हैं। इनके अतिरिक्त अन्य सभी चलायमान हैं जिनके अन्तगत रूपांतर तथा स्थानान्तर हुआ ही करता है। इन वाद्यों में तीन स्थान हैं स्याही, लव, (बीच, सफ़ेद) चांट (किनारी) यद्यपि बायें का भी समाकार है, किन्तु बजाने में स्याही के नीचे लव, (सफेद) का अधिक प्रयोग होता है। अब मृदंग में वर्ण निकालने की रीति सुनो—

ता—पंजा सोधा करके दाहिनी तरफ़ स्याही और लव से सम्पर्क रखकर ऊपर कीं ओर मारे, इसे "थाप" भी कहते हैं।

दीन्—पंजा सीधा करके दाहिने की स्याही पर खुला मारनें से बजता है।

ना—दाहिने की तर्जनी उंगली से चांट (किनारी) पर मारने सेबजता है

ती—अनामिका और मध्यमा को एक साथ दाहिनी स्याही पर मारकर दबा रखें।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

टी—केवल तर्जनी से उन्हीं दोनों के पास बन्द आघात करे (वे दोनों उठ जांय)

घ—बांया पंजा सीधा करके बीच आटे पर अपनी ओर खुला आघात करे।

क—बांये हाथकी गदेली आटे पर और उंगुलियां नीचे गिरें, किन्तु बन्द, गां, का, ड़ा, ला, यह सब ता के प्रतिनिधि तथा परिवर्तन शील हैं।

ति, *म*, *थुन*, ये सब "*दीन्*" की तरह बजते हैं।

त, *रि*, *र*, ये "*ट*" की तरह बजते हैं।

तक्, *कक्*, *कीं का कत्*, यह सब "*क*" की तरह बजेगें।

धा, घ और *ता* को एक साथ मारने से बजता है, इनमें दोनों हाथों का संयोग है *धीन्* घ और *दीन्* से बनता है।

धे, धीत्, धेत्, यह सब घ और *ति* को साथ मारने से बनते हैं।

त्रक—बायें हाथ का "*क*" दाहिने में "*ट*" का स्थान लेलेता है, अथवा तैयार होने पर तीरकीट का त्रक अपने आप बन जाता है।

कड़ान—क और *तान्* को आगे पीछे मारने से बनता है (शुद्ध रूप क्रतान है)

घड़ान—घ और तान के आगे पीछे मारने से बनता है (शुद्ध रूप घतान है)

नोट—इन दोनों शब्दों में आने वाला 'न' अगुलियों के कोर द्वारा स्याही पर निकलता है, किन्तु विशेषतया यह हलन्त बन जाता है)

पूर्वाचार्यों और शास्त्रोक्त यह परम्परा मिलती है, कि पढ़न्त के शब्द तथा बजन्त के शब्दों में भिन्नता रहती है। इस में आश्चर्य न करो, पूर्वाचार्यों ने बहुत सोच समझकर यह कार्य किया है, नहीं तो मृदंग की उदारता थोड़े शब्दों से संकीर्ण हो जाती। तात्पर्य यह है कि वाद्य यंत्र जितने हैं यह शब्द नहीं बोला करते, केवल ध्वनि के आधार पर शब्द बांधा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जाता है। यही कारण है कि ध्वनि से आधारित कोई भी वर्ण उंगुलियों के अभ्यस्त हो जाने पर प्रिय लगता है। जिस प्रकार "हार्मोनियम" के सात स्वरों पर अक्षरों को रखकर गायन का रूप दिया जाता है, उसी प्रकार मृदंग में भी जानना चाहिये फर्क इतना है कि हार्मोनियम में स्वरान्तर हुआ करता है मृदंग में नहीं। मैंने ऐसे बहुत से बजाने वाले देखे हैं जिन्हें क़ायदे का कुछ भी ज्ञान नहीं रहता परन्तु बजाते सुन्दर हैं।

प्रथम मुनिन हरि कीरति गाई। तेहि मग चलत सुगम मोहि भाई॥

अब हम कुछ शब्दों के उदाहरण से यह सिद्ध कर देते हैं, कि कौन शब्द क्या बजते हैं और क्या पढ़े जाते हैं? मिलान करो, (तबले में भी इसका प्रयोग यथा समय होता है।)

पढ़न्त के शब्द	बजन्त के शब्द
कुधान्	कीट धान
कुधाकेटे	कीटधा तेटे
तक्टि तका	कतिट कता
धीर किट तक	धीरधीर कीट
तेट कत	किटतक
गदि :गन	घदि घन
कत कंत	तक तक
तीर किट तक ता	तीट कतिट कता
कड़ धा	तक धा
तक धा	कत धा
घड़ान	घतान
धुमकिट	घदि तिट
तका थुगां	कता घता
तक घे:	कत घे:
किड़ना	कतिना
घिं तीर कीटतक	घतेट कतेट का
धी लान्	घतान्
थु	दी से भी घ से भी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सत्य तो यह है, कि मृदंग तबला में जिस स्थान से जो वर्ण, बिना रुकावट के निकल जाय वह श्रेष्ठ है ? किन्तु शब्दों में बन्द और खुला का विचार करना आवश्यक है ?

शिष्यः—मृदंग तबला मिलाने तथा वायें में आटा लगाने का क्या नियम है ?

गुरुः— इन उक्त वाद्यों में सोलह सोलह घर होते हैं, जो बदधी से नियंत्रित रहते हैं तथा इनकी सोलह बद्धियों को लकड़ी के आठ गट्टे, अपनी पीठ पर उठाये रहते हैं ? जिससे इनका तनाव ढीला न पड़ सके, मिलाने के लिये सर्व प्रथम स्वर ज्ञान करना आवश्यक है, बिना स्वर ज्ञान किये मिलाना अत्यन्त कठिन है ? कुछ लोग तो ऐसे मिलते हैं जो गिनकर हथौड़ी मारते हैं, और सभी घर बराबर हो जाते हैं। अब आटा लगाने का नियम सुनो ? बढ़िया गेहूं का आटा लेकर उसे अच्छी तरह भिगोदे, पुनः उसको वायें पूड़े पर मर्दन करे, जब मर्दन करते २ लस निकल आये तो उसे चिपकादे ? किन्तु आटे का स्वर ठीक दाहिने के नीचे सा में हो जिससे दोनों एक स्वर में बोलें, अगर स्वर अधिक हो तो और आटा लगाना चाहिये, और कम हो तो आटा निकालना चाहिये ? (मृदंग के बायेंमें आटा लगता है)

शिष्यः—ताल देने का अभ्यास किस प्रकार करना चाहिये ?

गुरुः—दाहिने से बायें हाथ की हथेली पर एक कहकर आघात करे पुनः दो अनामिका से तीन मध्यमा और चार तर्जनी से गिनकर पुनः पांच पर ताली दे, पश्चात उक्त क्रमानुसार ६. ७. ८ गिनकर ९ पर दाहिने हाथ को बायें से साधारण झटके के साथ पृथक करे, पुनः उक्त क्रमानुसार १०, ११, १२, तक गिनकर फिर तेरह पर ताल दे, फिर, उक्त क्रमानुसार १४, १५, १६, तक गिनने से तीन ताल होगया। अन्य तालों में भी यह रीति काम देगी, उसका भी संकेत बराबर करते जायेंगे ? हां ताल को पक्का करने के लिये बायें हाथ से विलम्बित ताल दे तो दाहिने हाथ से दून में, और जब मध्य लय ठीक हो जाये तो अणद्रुत (चौगून) में उसी रीति से अभ्यास करे।

वायें—से +० । । । २ । । । ० । । । ३ । । । – स्थाई

दायें से—+ । २ । ० । ३ । + । २ । ० । ३ । – दून

पुनः दांयें से—+ २ ० ३ + २ ० ३ + २ ० ३ + २ ० ३–चौगून

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उक्त नियमों का पालन करने से तालाभ्यास अति सुन्दर हो जायेगा ?

शिष्यः—मृदंग तबला किस लकड़ी का अच्छा बनता है।

गुरुः—विजय सार, नीम,चन्दन, खैंर, आम, शीशम, गम्हार, का

शिष्यः—तबला के विष्य में मृदंग से पृथक बातें आपने नहीं बताई,

गुरुः—मृदंग तबला में तीन अन्तर के सिवा कोई अन्तर ही नहीं है ?

१—मृदंग की गम्भीरता तबला में पृथकता होने से नहीं है, (मृदंग का आकाश १ होने से गम्भीर है)

२—मृदंग सीने की ताक़त से बजता है, और तबला हाथों की ताक़त से ?

३—हथौटी और निष्कासन विधि में भी थोड़ा अन्तर पड़ता है ?

प्राचीन ग्रंथ जैसे संगीत रतनाकर, भरत कल्पलता मंजरी, राग, कल्पद्रुम, संगीत मकरंद, तुलसी कृत रामायण, बालमीक, रालायण, तथा शिव ताण्डव आदिकों में तबला का नहीं मृदंग का बखान है, यद्यपि तबले की कुछ स्वतंत्र पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। परन्तु शास्त्रीय विषय उनमें भी मृदंग का ही है। अस्तु तबला मृदंग का अभिन्न अंश है ? इसका आपस में व्रह्म जीव सा सम्बन्ध है ? तबला रुपी जीव का ताल प्राण है ठेका नासिका है, तिहाई, नेत्र हैं, और परने वस्त्रवत हैं एवं अन्य प्रकार के क़ायदे आभूषणालंकार के सदृश हैं। एक बात स्मरण रखने योग्य यह है, कि तबला करनी का विषय है, कथनी का नहीं. अस्तु मन से मनन करने की अपेक्षा हाथों का अधिक अभ्यास होना चाहिये, क्योंकि तलवार उसी की है जो मैदान में मारे ?

(श्री राम जय राम जय जय राम)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चिन्ह परिचय

\+ यह चिन्ह सम का सूचक है, इसीसे ताल का प्रारम्भ जानना चाहिये ।

० यह खाली स्थान का सूचक है, इसमें ताली नहीं बजेगी ।

२-३-४ आदि—यह सम के पश्चात आने वाली तालियों के सूचक हैं ।

अ, इ, उ, आ, ए, न्,—आदि लय पूर्ति के सूचक हैं ? इनका उच्चारण मुख से होगा, किन्तु तबला मृदंग में श्वास द्वारा झलकाया जायेगा ?

(जिस शब्द के आदि में यह चिन्ह हो, उससे लेकर अन्त पर्यन्त तक सभी शब्द तीन बार बजेंगे ? यथाः—(कृधान कत कत धा ३)

ˎ इस चिन्ह के वर्ण पढ़न्त में आयेंगे बजन्त में नहीं जैसे तत्-कत् दीत्-कड़ान्

❀ जिस बोल में यह चिन्ह होगा, वह प्रारंभ से लेकर तिहाई पर्यन्त तीन बार बजेगा ? (चक्कर दार-नव हक्का, में इसका प्रयोग होगा)

— जिन दो अक्षरों के बीच में यह चिन्ह हो, उन्हें आपस का संबन्धी समझना चाहिये । जैसे कड़ा-आन=लिखने में, कड़ान पढ़ने में, कृधा-आन=कृधान आदि २ इसी प्रकार अन्य आने वाले वर्णों को भी समझिये ।

‿ इस कोष्ट के अन्तर्गत आने वाले सभी अक्षर १ मात्रा में होंगे जैसेः—

धागे धागे तीट ० धागे तीर कीट तीर कीट तक धगन तेटकट गदिगन

क-न्-आ-वगे रह जहां अकेले रहेंगे वे एक मात्रा में रहेंगे । (क तिट धग न्न)

नोट—उक्त चिन्हों को याद कर लेने से आने वाले बोलों में सुविधा रहेगी)

आजकल प्रायः ऐसा देखा जाता है, और सुना जाता है, कि एक तबला या मृदंग बजाने वाला दूसरे को बहुत न्यून समझता है । यदि किसी खास वादक से प्रश्न किया जाये कि अमुक वादक तबला या मृदंग कैसा बजाता है, तो उसे यही उत्तर मिलेगा कि अभी तो उस अमुक वादक को हाथ भी रखना नहीं आता वो तो कहीं इधर से उधर दो चार बोलों को उल्टा सीधा बजाकर अपना रंग जमा लेता है । इस प्रकार अपने वक्तव्य से अपने हृदय की संकीर्णता का परिचय दे देता है । अस्तु पाठकों को बड़ी सावधानी से इन बातों का त्याग करना चाहिये । यह संगीत विद्या किसी की पैतृक सम्पत्ति नहीं है, अपितु सद्‌गुरुओं की वस्तु है और अभ्यास के गर्भ से इसका जन्म होता है ।

जे पर भनित सुनत हरषाहीं । ते बर पुरुष बहुत जग नाहीं—श्री तुलसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

वन्दना

चौ०— जयति गिरा पति प्रभु धनु पानी । जय गज वदन महेश भवानी ॥
जय गिरिवर समेत पट रानी । वायु तनय बल बुद्धि विज्ञानी ॥
जय गुरुवर जय दीन दयाला । नारदादि मुनि परम कृपाला ॥
नाद सहित जो हरि यश गावा । राम भगत मंह सुयश सुहावा ॥
सब गुणज्ञ ज भूतल वासी । साम वेद कंह परम उपासी ॥
भये जे अहहिं जे होइहें आगे । विनवों सबहिं कपट छल त्यागे ॥
अगम सुगम वर देहुं कृपा कर । प्रस्तुत करत मृदंग प्रभाकर ॥
यहि मंह नहिं अभिमान प्रकासा । ताते विनय करत यह दासा ॥
दोहाः— गुण ग्राही सज्जन सुमति, पढ़त होहिं सानन्द ।
राम कृपाते पूर्ण भा, मैं सेवक मति मन्द ॥

चौमुखा प्रस्तार

(हस्त साधन विधि)

	+	२	०	३
(१)	ता	दीत्	थु	ना
(२)	तत	दीदी	थुथु	नाना
(३)	ततत	दीदीदी	थुथुथु	नानाना
(४)	तततत	दीदीदीदी	थुथुथुथु	नानानाना
(५)	तक्किट	दीक्किट	थुक्किट	नंक्किट

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(६) तक्किट किटतक दींक्किट किटतक थुंक्किट किटतक नंक्किट किटतक

(७) तकिटत काकिट दीकिटत काकिट थुंकिटत काकिट नाकिटत काकिट

(८) तकधुम किटतक तक्का थुंगा दीत्धुम किटतक तक्का थुंगा

थुन्धुम किटतक तक्का थुंगा नंधुम किटतक तक्का थुंगा

(९) त थुंगा तक्का थुंगा तक्किट किटतक तक्का थुंगा

ताकि टधि किट तक तक्किट किटतक तक्का थुंगा

दीत् थुंगा दीदी थुंगा दीक्किट किटतक दीदी

दीती टधी कीट तक दीक्किट किटतक दीदी थुंगा

थुन् थुंगां थुंथुं थुंगां थुंक्किट किटतक तक्का थुंगा

तकि टाथुं किट तक थुंक्किट किटतक तक्का थुंगां

नन् थुंगा नंनं थुंगा नंक्किट किटतक नंनं थुंगा

तकि टनं किट तक नंक्किट किटतक नंनं थुंगा

तिहाई

(१०) तकिटत काधुम किटतक गदिगन धा थुंथुं तकिटत

काधुम किटतक गदिगन धा थुंथुं तकिटत काधुम

किटतक गदिगन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मृदंग अध्याय

(ताल ध्यानम्)

श्लोकः— रथा रुढ़े शंख हस्ते चतुस्त्री परवेष्ठितम् ।
गौर वस्त्र धरं ज्ञान मुद्रा भयंकरं द्वयम् ॥
व्रहमे वंशो भवं चे व ताला ध्यायामि मेंहृदि ।
पुण्य रुपं सुखं तालं मुख्य व्रहम् मयं भजे ॥ (संगीत मकरंद)

चार ताल मात्रा १६ ताली ४ खाली २

	सम		खाली		ताली		खाली		ताली		ताली	
	+	।	०	।	२	।	०	।	३	।	४	।
(१)	धा	धा	दिं	ता	तीट	धा	दिं	ता	तीट	कत	गदि	गन

दून

	+		०		२	
(२)	धाधा	दिंता	तीट धा	दिंता	तीटकत	गदिगन

०		३		४	
धाधा	दिंता	तीट धा	दिंता	तीटकत	गदिगन

तिगून

	+		०		२	
(३)	धाधादिं	ता तीट धा	दिंता तीट	कत गदिगन	धाधादिं	ता तीट धा

०		३		४	
दिंता तीट	कत गदिगन	धाधादिं	ता तीट धा	दिंता तीट	कत गदिगन

चौगून

	+		०		२	
(४)	धाधादिंता	तीटधादिंता	तीटकतगदिगन	धाधादिंता	तीटधादिंता	तीटकतगदिगन

०		३		४	
धाधादिंता	तीटधादिंता	तीटकतगदिगन	धाधादिंता	तीटधादिंता	तीटकतगदिगन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ठेका की त्रिपल्ली

	+		०		१	
(५)	धा	धा	दिं	ता	तीट	धा

	३			४	
धाधा	दिंता	तीट धा	धाधादिंता	तीट धादिंता	तीटकतगदिगन

भिन्न प्रकार

	+		०		२	
(६)	धा	धा	दिं	ता	धाधा	दिंता

०		३		४	
तीट धा	दिंता	तीटकतगदिगन	धाधादिंता	तीटधा दिंता	तीटकतगदिगन

ठेके का बांट

	+		०		२	
(७)	धादिं	ता गदि	गन धा	दिंता	कृधा	दिंता

०		३		४	
तेटकत	गदिगन	धादिं	ताकत	कतधीक	ट धान

दूसरा तिस्र चतुस्र मिश्रित

	+		०		२	
(८)	तीटकत	गदिगन	धादिं	ता कत	गदिगन	धादिं

०		३		४	
ता कत	गदिगन	कीट धादिं	ता तीट धा	दिंता तीट	कत गदिगन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्वादश ठेका चित्र

१	धा	धा	दिं	ता	तीट	धा	दिं	ता	तीट	कत	गदि	ग
२	धा	दिं	ता	तीट	धा	दिं	ता	तीट	कत	गदि	गन	धा
३	दिं	ता	तीट	धा	दिं	ता	तीट	कत	गदि	गन	धा	धा
४	ता	तीट	धा	दिं	ता	तीट	कत	गदि	गन	धा	धा	दिं
५	तीट	धा	दिं	ता	तीट	कत	गदि	गन	धा	धा	दिं	ता
६	था	दिं	ता	तीट	कत	गदि	गन	धा	धा	दिं	ता	ती
७	दिं	ता	तीट	कत	गदि	गन	धा	धा	दिं	ता	तीट	धा
८	ता	तीट	कत	गदि	गन	धा	धा	दिं	ता	तीट	धा	दिं
९	तीट	कत	गदि	गन	धा	धा	दिं	ता	तीट	धा	दिं	त
१०	कत	गदि	गन	धा	धा	दिं	ता	तीट	धा	दिं	ता	तं
११	गदि	गन	धा	धा	दिं	ता	तीट	धा	दिं	ता	तीट	क
१२	गन	धा	धा	दिं	ता	तीट	धा	दिं	ता	तीट	कत	गदि

नोट:—इस रीति से अन्य तालों का भी चित्र बन सकता है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

साथ परन २ आवृति

चार ताल

	+		०		२		०		३		४	
(९)	धाग	तेट	गदि	गन	तागे	तेट	गदि	गन	कृधा	केट	गदि	गन
	नागे	तेट	गदि	गन	कति	टक	तिट	कत	कत	गदि	गन	कत

साथ परन १ आवृति

	+		०		२		०		३		४	
(१०)	धागे	तेट	धितीर	किटतक	तागे	तेटे	कृधा	केटे	धीकी	टधा–आन	कत	

साथ परन २ आवृति

	+		०		२		०		३		४	
(११)	धग	नधी	कीट	कृधा	कीट	क्रत	धितीर	कीटधी	कीट	धागे	तीट	कृधा-
	आन	कत	कतीर	कीटधी	कीट	धड़—अन	कत	तीरकीट	तकता	तेटकत	गदिगन	

साथ परन २ आवृति

	+		०		२		०		३		४	
(१२)	तेट	कत	गदि	गन	धाकि	टधा	कृधा	दिंता	कत	कृधा	दिंता	धाकिट
	तकधा	दिंता	कता	गदि	गन	कृधा–आन	तीरकीट	धीकी	टधा-आन	कत		

रेला २ आवृति

	+		०		२		०		३		४	
(१३)	धीकी	टत	गन	धीकी	तट	गन	धीट	धीट	धीकी	टत	गन	धीकी
	टत	गन	धीट	धीट	धीकी	टत	गन	तग	तेट	कत	गदि	गन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रेला २ आवृति

चार ताल

	+		०		२		०		३		४	
(१४)	कते	टत	गन	कते	टत	गन	कत	कत	कते	टत	गन	कते
	+		०		२	०		३		४		
	टेत	गन	कत	कत	कते	टेत	गन	तग	तेट	कत	गदि	गन

बाज बहेरी रेला २ आवृति

	+	०			२	
(१५)	धीर कीट	धीर कीट	धः धः	धीर कीट	धः धः	धीर कीट
	०		३		४	
	धीर कीट	धीर कीट	धीर कीट	तक धीर	कीट तक	धीर कीट
	+		०		२	
	घड़ान	धाधा	दिंता	केड़नक	तीर कीट	तकतीर
	०		३	४		
	कीट तक	तीर कीट	तकड़–आ।नधा	धीर धीर	किटतक	

रेला १ आवृति

	+		०		२	
(१६)	धाकिट	तक धुम	किट तक	गदि गन	नग तीर	किट तक
		०	३	४		
	तग तीर	किट तक	तीर कीट	तकता	तेट कत	गदि गन

रेला (पड़ाल) ४ आवृति

	+		०		२	
(१७)	धाकिट	तकि टत	काकिट	धुम किट	तकि टत	काकिट
	०		३		४	
	तकि टत	काकिट	धुम किट	धुम किट	तकि टत	का किट

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चार ताल

+		०		२	
तक धुम	किट तक	धुम किट	तकिःते	काकिट	तक धूम
०		३		४	
किट तक	धुम किट	तकि टत	का किट	तकि टत	काकिठ
+		०		२	
धुम किट	तक धुम	किट तक	धुम किट	तक धुम	किट तक
०		३		४	
धुम किट	घड़ान	तकि टत	का किट	तकि टत	का किट
+		०		२	
कड़ान	तकि टत	का किट	घड़ान	तकि टत	का किट
०		३		४	
तकिटत	काकिट	धुमकिट	घड़ान	तेटकत	गदिगन

(नोटः— उक्त रेले की लय का ब्योरा दे कर बजाने से रेल की चाल का अनुमान होगा)

परन २ आवृति

(१८)

+		०		२	
धागे तेट	तागे तेट	क्रधा केट	धागे तेट	तग नध	गन धग
०		३		४	
दिग तागे	तेट कत	घेघे तीर कीट	तक ता कत्	(तक्कधि	कीट धागे
+		०			
तीट क्रधा—आन	कत	धा ३			

परन २ आवृति

(१६)

+		०		२	
धागे तेट	तागे तेट	धागे दिग	नागे तेट	क्रधा केट	ग दि गन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चार ताल

०		३		४	
घिं तीर किट तक	तागे तटे	कति टत	गन तग	तेट कत	गदि गन
+		०		२	
धा धा	धा कति	टत गन	तागे तेट	कत गदि	गन धा
०		३		४	
धा धा	कति टत	गन तग	तेट कत	गदि गन	धा धा

सुन्दर शृङ्गार परन ३ आवृति

(२०)

+		०		२	
तागे तेट	केट तागे	तेट केट	तागे तेट	तागे तेट	तागे तेट
०		३		४	
धागे तेट	केट धागे	तेट केट	धागे तेट	धागे तेट	धागे तेट
+		०		२	
धग नधी	कीट धग	नधी कीट	धागे तेट	धागे तेट	धागे तेट
०		३		४	
धग नधी	कीट धागे	तेट क्धा	केट धगे	तेट कत	गदि गन
+		०		२	
धीकी टत	गनधी	तगन्न	धीता	कीटतग	नधान
०		३		४	
धा किट	किट तग	नधान	धाकिट	किट तग	न धान

(यह दून तीन चौगून में बजेगा)

काल परन ४ आवृति

(२१)

+		०		२		०		३		४	
धाकिट	तकधुम	किटतक	धेः	ता	कधा	कड़ान्	धा	कातीर	किटतक	घेंता	कत

+		०		२		०		३		४	
तक धुम	किट तक	तक्का	थुंगा	धा	आ	दिन्	ता	धाधिड़	नगतेट	कीटधा	गदिगन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चार ताल

+ ० २ ० ३ ४ +
धागे गेधां गेगे धागे दीन् दांदां दींदां (किटतक ता दी धा दी धा ३

(महान्त तुलसी दास से प्राप्त)

परन २ आवृत्ति

+ ० २ ० ३
(२२) धागेतेट धागेतेट तागेतेट तागेतेट कृधाकेट धागेतेट गदिगन नागेतेट तकधुम

४ + ० २ ०
किटतक गदिगन धागदि गनधा गदिगन धा गदिगन धा गदि गन धा गदिगन

३ ४
धा गदिगन धा गदिं गनधा गदिगन

काल परन ४ आवृति

+ ० २ ० ३ ४
(२३) धेट तेट दीन् नते टेता – आन तेट ताआ नते टेता आन किटतक थुंथुं

+ ० २ ० ३ ४
कृधा आन्ता कृधा नाना धाकिट तकधुम किटतक धाआ–नधा–आधा–आन धा

+ ० २ ० ३ ४
आधा–आन–धा धाकिट तकधुम किटतक धाआ–नधा–आधा–आन–धा–आधा

+ ० २ ० ३ ४
आन धा धाकिट तकधुम किटतक धाआ–नधा–आधा–आन धा–आधा–आन

ताल परन (चक्करदार) ४ आवृति

+ ० २ ०
(२४) धा * धकिटध दिताकृधा दिताकता धगेनधा गेने नागे नागे तीरकीट कड़त्त

३ ४ + ० २
धीरकीट धेटकत–आधान धाधेट कतआधा–आनधा धेटकत–आधान धा ३

(दूसरे मात्रे से आरम्भ करे)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परन ४ आवृति

चार ताल

	+		०		२		०		३		४		+		
(२५)	धा	दीन्	ता	कीट	ता	दीन्	धा	कीट	धा	दीन्	ता	(घेघे	तेटकत	गदिगन	

०		२			०		३		४		
धा	घेघे	तेटेकत	गदिगन		धा	घेघें	तेटकत	गदिगन	धा ३ ता,	का दम	

देकर उक्त चिन्ह से तीन बार बजाये ।

परन आवृति २

	+		०		२		०	
(२६)	धागे तेट	धागे तेट	तागे तेट	तागे तेट	कृधा केट	धागे तेट	गदिगन	नागे तेट

३		४		+		०	
धःधः	धेटतेट	कतान्त	किटतक	धागे तेट	कृधा केट	नागे तेट	धागे तेट

२		०		३		४	
कृधा केट	नागे तेट	ताक्र	धानधान्	धाक्र	धान् धान्	धाक्र	धान् धान्

परन २ आवृति

	+		०		२		०	
(२७)	धा	गदिगन	धा	तेटकत	गदिगन	धा	दिन्ता	धादिन्

३		४		+		०	
ताधा	ता तीट	कत गदि	गनधा	दिन्ता	दिन्ता	धा गदि	गन तेट

२		०		३		४	
कत गदि	गन धा	धा तीट	कत गदि	गन धा	धा तीट	कत गदि	गनधा

परन २ आवृति

	+		०		२	०	
(२८)	धाकिट	तकधुम	किट तक	थुंथुं	नते	टेता–अधा	दिन्ता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चार ताल

३ ४ + ०
कुधा कीट–अधा दिन्ता तेट कत गदिगन घुम किट तकधा

० ० ३ ४
दिन्ता गदिगन–आ तक–धा दिन् ताआ–तक धा दिन्ता–आ तक

बारह हज़ारी परन २ आवृति

\+ ० २ ०
(२९) ताग तेट कीट धागे तेटधागे दीं दीं नगन्न गीन दिन नाना किट धागे तेट

३ ४ + ०
धागदिन् नगनधा–न्धा क्तिा कत् घें:घें: धागेतेट कता तक थूं

२ ० ३ ४
किटतक घें:घें: घेत् गदिगन नगदिग तेट घड़ा–आनकत गदिगन

(श्री कोदऊ सिंह को इसपर १२००० रु० इनाम मिले थे)

लयकारी १ आवृति

\+ दून ० २ तिगून ०
(३०) तेट कत गदि गन, धा आते टेकत गदिग नधाआ,

३ चौगून ४ छेगून १२ गून १६ गून
तेंटकत गदिगन, धा तेट कत, गदि गन धा, तेट कत गदि गन,

(एक आवृति में १६ वीं लय तक का हिसाब है)

काल परन १८ मात्रे में

० ३ ४ + ०
(३१) धाकिट तकघुम किटतक थुंगा तक तक थुंगा तक थूं तेटकत गदिगन

२ ० ३ ४
धाकड़–आनधा तेट कत गदि गन धा तेट कत गदि गन धा तेटकत गदि गन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चार ताल

तिस्र (आड़ी) ८ मात्रे में

	+		०		२		०		३		४	
(३२)	धा	धा	दिं	ता	तगन	धतेट	घितेट	कत्त	धा	कत्त	धा	कत्त

आड़ी धा, ता, रहित २ आवृति

	+		०		२		०	
(३३)	घड़ान	नगन	नकिट	थुकिट	घिनन	दधिन	नगृद	दिगन
	३		४		+		०	
	नगन	गनग	कड़ान	किड़ना	घिनन	दधिन	दीगन	तगन
	२		०		३		४	
	कड़ान	कड़ान	धड़ान	कड़ान	कड़ान	घड़ान	कड़ान	कड़ान

आड़ी ४ आवृति

	+		०		२		०		३		४
(३४)	तीटती	टतीट	तगन	नगन	धीटती	टतीट	दीत्र	ड़ान	कत्त	कतिट	घुमकी
		+		०		२		०		३	
	ट तक	तकिट	थुंकिट	तक थूं	थून्	घेटक	तान	तगन	गधग	दिंता	कत्
	४		+		०		२		०		३
	नग	न–ड़ान	घुमकि	टतक	तकघु	मकिट	गद्द	धिकीट	घेटक	तान	धागदि

	४		+		०		२		०		३	
दीगन	धा	गद्द	धीकीट	घेटक	तान	धाग	दीगन	धा	गद्द	धीकिट	घेटक	तान
		४										
		धाग	दीगन									

परन २ आवृति (भड़ौआ दादरा)

	+		०		२		०		३		४
(३५)	धात्र	कधा	तेट	क्धा	तेट	क्धा	तेटे	कना	कति	टधा	तेट

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चार ताल

\+ ० २ ० ३ ४

धीता तेट धीता ता दीनाक्र धान तान धाक्र धान तान धाक्र धान तान

(लोच देकर बजावे)

आड़ी १ आवृति

\+ ० २

(३६) धा किटतक घुम किटतक धीर किटतक त कड़ान धा गदिगन धाग दिगन

० ३ ४

नगधेनग तिर कीट तक धा किट तक घुम किट तक धा किट तक घुम किट तक

सम से सम तक तिहाई

\+ ० २

(३७) कती टीधा किट तक दिंगाड़ धाआ–आक तेटे

० ३ ४

धा किट तक द्रिगड़ धा आआ कती टीधा किट तक दिगड़

दूसरी

\+ ०

(३८) कत्,तीरकीट तकताकिटतक गदिगनधागदि गनधागदिगन

२ ०

धा तीर कीट तक ता तेट कत गदि गन धा गदि गन धा गदि गन

३ ४

धा, तीर कीट तक ता तेट कत गदि गन धा गदि गन धा गदि गन

तीसरी

\+ ० २

(३९) धा किट तक धुम किट तक थुंगा धा, थुंगा धा, थुंगा धा, आ धुम किट तक थुंगा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चार ताल

०		३		४	
धा थुंगा	धा थुंगा	धा आ धुम	किट तक थुंगा	धा थुंगा	धा थुंगा

मिश्र (विड़ाड़ी २ आवृति

	+		०		२		०	
(४०)	धाग	घेट घेट	धगन	धागे तेट	क्ड्ध्	घेंट तेट	कत्त	गदिगन
	३		४		+		०	
	कत्त	घेघे तेट	घेघेन	नागेतेट	थुकिट	थुंगा	कतग	दीगता
	२		०		३		४	
	धाकिट धुम	किट तक गदि गन	धाक्त	धागदिगन	धाक्त	धागदिगन	धाक्त	धागदिगन

विड़ाड़ी १ आवृति

	+		०		२	
(४१)	धीकीट	धेननक	धिकीट	ता तीरकीट	तकिट	केन नक
	०		३		४	
	तकिट	ताक्त	धात	धाक्त	धात	धाक्तन

अन्तावृति १

	+		०		२	
(४२)	धा किट तक	धेत्ता	किट तक धे	त्ता	कधा	क़िट तक दिंगड़
	०		३		४	
	धा किट	किट धा	किट तक दिंगड़	धाकिट	किट धा	किट तक दिंगड़

———

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चार ताल

(बोल परन) रणशोभा छन्द मिश्र जाति में (सम्पूर्ण)

+ ० २ ०
(४३) किटतक्र त गन कत कतिट गन तग तिरकीटत कीटत्रीकीट तकिट

० ३ ४ + ०
तीर कीटतक ता धानि नानघ ड़ान कत कता कतक धीकीटक तकधी कीटधेट

२ ० ३ ४
दाम ठक ठक कड़क धड़कध ड़ाम धड़ धड़ तक्क झीझी केट
ध ड़न घी घी तेट

+ ० ० २ ०
धात झीझी केट तगन झीझी केट झीझी के टेतगन तड़ाक तड़धेः
घी घी तेट घी घी तेट घी घी ते

३ ४ + ०
ताक्र धेत्ता क्रधा धान नानक्र धान कड़कड़ कड़ान् कड़ कड़ कड़

२ ० ३
धड़ धड़ धड़ धड़ वजत दुन्दुभि विबुध वरसिप्र सून बदतवि
दी तेटें दिन्दीध दीं दीध गतिटत्री दीन दी दी तागे

४ + ० २ ०
रदव रद श्री राम चढ़े वस कोपि सेनस मेत लंकहि कटक
तेटेग तेटेत्री गदी कतिटता कदि द न्नके तेट दीं कत

३ ४ + ०
टहिकर पुटकि चटकहिं शीश तोरिम रोरि घोरिव होरि
ता तेटक तेटकत क क तीटदिं तेट कत दीं देट

२ ० ३ ४
दांत वि दोरि दपटहिं धत्त धरि मत गत्त करि कत कत्त
दीं तदीं तेट दी तेटता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चार ताल

+		०		२		०			
भत्तत	भिड़त	जवसर	कटत	फटतन	टतगि	रत पुनि	उठत	लरतघ	
	धाकिट	दीदीतेट	कतिट	धतिटन	तेटग	तेट थुन	कतिट	दीन तेट	

३		४		+		०		
मत्त	घम घम	झाग	झीक झीक	झगं	झकझक	ठनक	खंगठ	नाक

	०		३		४	
ठक ठक	अरिन	उर धक	धकनि	धक धक	जूझि	जूझिअ
	कतिट	तेट			दीधा	दीधाग

+		०		२		०	
रुज्झि	मारहिं	उरवि	दारहि	करस्ड	पारहि	मुन्ड	गहिमू
दी धा	दीत ता	तेटग	तिटता	कतिट	तादिंतां	दीन्द	गतादीन्

३		४		+		०	
न्डनहि	मारहि	पटकि	डारहि	मुखन	श्रीरघु	पतिउ	चारहि
धिनता	दी तेट	तेटक	दीं तत	दीपन	त्रीनागे	तीटक	तीटता

२		०		३
कड़ान	किड़तक तीर कीट	धान	किट तक धीर कीट	तक्क

	४		+	
तक तक धीर कीट	धीर कीटता	धीर धीर किट तक	तक्क	कक तक

०		२		०	
तक तकत	कक तक	कड़ान्ता	कक तक	दीग दीग दीग	तगथेइ ताता

३		४		+	
थेईता	तिधा थेई	तग दिग तग	दिग तग थेई	थेईत	तिधा तीरकीट

०		२		०	
थेईत	तिधा तीरकीट	धात	तिधा तीर कीट	धात	तिधा तीरकीट

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चार ताल

३ ४ + ०

धात नांचत कंक नीकर ताल लीयेक पाल नटकं

नातेटे तीटक तादीं

२ ० ३ ४ +

काल गावत प्रेत डंकिनी खक्ख खड़गै ताल चामुन डाड

गदीतं धेत दीकनी तादी का दीन् दींद

० २ ० ३

पट्टत घूंघरु घूंकक घूंक घननन छूम छन नन ननछ

ततेट घनन

४ + ० २

नननन लेमु दंगन कढ़त "पागल" धड़क धड़ कड़ कड़ान

ता दीन

० ३

कड़ कड़ कड़ां घड़ान कड़ान्धा धांकिट तक धुमकिट तक तक

४ + ० २

कड़ान्ता किट नक धा नत्रक तागे तेट नत्रक तागे तेट (कड़ान

० ३ ४

कड़ा धाता धा कड़ान धाता घा कडां धाता धा ३

नोटः— उक्त छन्द देखने में पंवारा मालूम होगा, किन्तु अभ्यस्त हो जाने पर सुख की राशि प्रतीत होगा ? यह निश्चित है, कि किसी भी समाज में चाहे हाथ से या हाथ मुख दोनों से सुना देने पर सर्वप्रिय सिद्ध होगा और सिद्ध हो चुका है ? शब्दानुकूल वर्णों को बांधकर उन्हीं के नीचे २ जहां तहां रख दिया है ? जिससे निकालने में सुविधा प्राप्त हो ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ ताल ध्यानम्

दोहा—कनक वरन शुचि शुभ्र तन, तिय संग खेलत फाग ।
विहंसि परस्पर अंकले, दरसत भरि अनुराग ॥
दस श्रुति (चौदह) अनुचरि संग में, त्रिपहर करत बिहार ।
ब्रह्म रूप प्रद ब्रह्म सुख, सुखद सुसरस धमार ॥ (पागल दास)

धमार १४ मात्रा, ताल ३ खाली ३

ठेका

	सम			खाली		ताली		खाली			ताली		खाली	
	+	।	।	०	।	२	।	०	।	।	३	।	०	।
(१)	क	धे	टे	धे	टे	धा	आ	ग	दि	न	दि	न	ता	आ

दून

	+			०		२		०			३		०	
(२)	कधे	टधे	टधा	आग	दिन	दिन	ताआ	कधे	टेधे	टधा	आग	दिन	दिन	ताआ

तीन

	+			०		२		०		३		०		
(३)	कधेट	धेटधा	आगदि	नदिन	ताआक	धेटधे	टधाआ	गदिन	दीनता	आकधे	टधेट	धाआग	दिनदि	नताआ

चौगून

	+			०		२	
(४)	कधेटधे	टधाआग	दिनदिन	ताआकधे	टधेटधा	आगदिन	दीनताआ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धमार

ο कधीटधी टधाश्राग दिन दिन ३ ता श्राक थी टधीटधा ο श्राग दिन दिन ताश्रा

साथ १० मात्रे में

(५) + क धे टे ο धे तेटे २ कत गदि ο गन त्रक धीकी ३ टधा–श्रान ο धा कृधा

साथ ६ मात्रे में

(६) + क धे टे ο धे टे २ धा श्रा ग ο तेट कत ३ गदिगन त्रीकीटतकता ο त्रकधीकी टधान

साथ १ श्रावृति

(७) + क धेट धेट ο धागे तेट २ कृधा श्रान ο ग दि नत किट तेट ३ घिकी ο टघा–श्रान

साथ १ श्रावृति

(८) + धग नधी कीट धागे तेट कृधा–श्रानधा ο कत कधा–श्रानधा २ कृधान

ο तेट कृधा केट कृधा गधी कीट ३ धागे तेट कृधा केट ο तेट कत गदि गन

साथ २ श्रावृति

(९) + धिकी टत गन ο धागे तेट २ गदि गन ο दीग दिन् ता

३ तेटे कत ο गदि गन + धातीर किटतक ता ο घितीर किट तक २ ता

तेट ο कत गदि गन ३ त्रक धीकी ο टधा–श्रान

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धमार

क्रमिक परन २ आवृति

	+			०		२	
(१०)	धाकिट	तकधुम	किट तक	गदिगन	घिंतीर	किट तक	तिरकीट

०			३				+
तकता	(तेटकत	गदिगन	धागे तेट	गदिगन	धागे तेट	गदिगन	धा ३

। नवग्रह क्रमिक परन २ आवृति

	+			०		२		०	
(११)	धाकिट	तकधुम	किट तक	धा	गदिगन	धा	तेटकत	गदिगन	धा

	३		०		+			०	
तिरकिट	तकता	धा	तेटकत	गदिगन	धा	ता	तिरकिट	तकता	धा

२		०			३		०	
तेटकत	गदिगन	धा	ता	तिरकिट	तकता	धा	तेटकत	गदिगन ।

क्रमिक परन २ आवृति

	+			०		२		०	
(१२)	धाकिट	तकधुम	किटतक	गदिगन	घिंतिर	किटतक	तगतिर	किटतक	घिंतिर

	३		०		+			०	
किटतक	तगतिर	किटतक	तिरकिट	तकता	(तेटकत	गदिगन	धा	कड़ान्	धा ३

क्रमिक परन २ आवृति

	+			०		२		०	
(१३)	धाकिट	तकधुम	किटतक	गदिगन	नगतीर	किटतक	ताकृ	धाती	धाकृ

	३		०	+			०		२
धाती	धाकृ	धाती	धा–आ–आकृ		धाती	धाकृ	धाती	धाकृ	धाती

नोटः—क्रमिक परन की रूप रेखा मिलती जुलती रहती है । । नवग्रह में नव धा सम्पूर्ण बोल में है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धमार

० २ ०
धा—आ—आक् धाती धाक् धाति धाक धाती

नखत क्रमिक परन २ आवृत्ति

\+ ० २ ०
(१४) धाकिट तकधुम किटतक गदिगन तिरकिट तकता गदिगन धाधा धा

३ ० + ०
धाधा धा धाधा धा तेटकत गदिगन धाधा धा धाधा धा

२ ० ३ ०
धाधा धा तेटकत् गदिगन धाधा धा धाधा धा धाधा

साथ १ आवृत्ति

\+ ० २ ०
(१५) धाकिट तकधुम किटतक गदिगन तिरकिट तकता (गदिगन धाधा धा ३

समा परन २ आवृत्ति

\+ ० २ ०
(१६) गदिन्ता केड़नक तेटकत घिनकत गदिकत गदिगन दिग तागे तेटकत गदिकत

३ ० + ०
गदिगन धाकत् गदिगन धा कत् गदिगन धा धाकत् गदिगन धा कत् गदिगन

२ ० ३ ०
धा कत् गदिगन धा ता कत् गदिगन धा कत् गदिगन धा कत् गदिगन

(समा परन के वर्ण समाकार होते हैं)

समा परन २ आवृत्ति

\+ ० २ ०
(१७) गदि गन धागे दीन् धागे टक ता गदिगन धा आ धा—आन धा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धमार

+			०			३				
किट तक	थुंगा	धा थुं	गाधा	थुंगा	धा आ	किट तक	थुंगा	धा थुं		

२ गाधा थुंगा ० धा आ किट तक ३ थुंगा धा थुं ० गाधा थुंगा

(श्री मदनमोहन जी मृदंगाचार्य)

परन २ आवृत्ति

(१८) + दिंगन कत धड़—अन कत ० कातिर किट तक तागे तेट २ तेट कात्र कधि किट

० धागे तेट (धागे नन नन घेन ३ नद घेघें तिर किटतक ता—आन ० तड़ धा

किटतक दिंगड़ + धा ३

परन २ आवृत्ति

(१९) + किट तक घे: ता किट तक घेता ० कताक घे: घे: २ घेट तेट धड़न्न द्रगेतेट

(घितीर किटतक तिरकिट तकता ३ तेट कत गदि गन तिरकिट तकता

० आनधा क तांगड़ + धा ३

स्रोता गतापरन ४ आवृत्ति

(२०) + क तेट घेघे ० तेट २ तक् घे—त्धुम किटतक ० गदिगन धा तग— ३ अन

० धा दीं + नक—अत ० धा—आतक धुमकिट तकिटत २ का किटतक ० दिंगड़

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धमार

२ ० + ०
धग्गे दीं गन धग्गे दीं गन धा किट किड़ना त्त कधी कीट

० ३ ०
(केट तक–आधुम किट तकं दिंगड़ धा तांगड़ धा ३

नोटः—उक्त परनों की चाल नदी जैसी रहती है।

परन ३ आवृति

\+ ० २ ० ३ ०
(२१) धिकि टत गन धागे तेट गदि गन धग नधि किट धागे तेट कृधा–आन

\+ ० २ ० ३
धा–आता–आन धी त्ता तेकि टत का धड़–अन धा तक थुन्

० + ० २ ०
किटतक दिंगड़ धा कत–आन तक थुन् किटतक दिंगड़ धा

३ ०
कत–आन तक थुन् किटतक दिंगड़

परन ४ आवृति

\+ ० २ ० ३ ०
(२२) धग्रि दधि किट धागे तेट कृधा केट कृध गधि किट धागे तेट कृधा

\+ ० २ ० ३
केट नगि नन गिन दिं नन किट तक तधि कधि किट धागे

० + ० २ ०
तेट कृधा–आन धा–आता–आन धि त्ता तकि टत का धड़—अन

३ ० + ०
धा तक थुन् किटतक दिंगड़ धा कत– आन तक थुन्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धमार

२ ० ३
किटतक दिंगड़ धा कत–आन तक थुन् किट तक दिंगड़

परन ४ आवृति

\+ ० २ ० ३ ०
(२३) धि कि टधा–आन धा–आ तकि टता– आन ता–आ तकि टथुं किट

\+ ० २ ०
थुंथुं किटतक दिंगड़ धा थुंथुं किट तक दिंगड़ धा थुंथुं किट तक दिगड़

३ ० + ० २ ०
धा आ तकि टथु किट थुथु किटतक दिगड़ धा थुथु किटतक दिगड़

३ ० + ०
धा थुथु किटतक दिगड़ धा आ तकि टथु किट थुथु किटतक

२ ० ३ ०
दिंगड़ धा थुंथुं किटतक दिंगड़ धा थुथु किटतक दिगड़

सिंहावलोकन ४ आवृति

\+ ० २ ० ३
(२४) धा किट क्रुध किट धात्र कधि किट धात्र कधि किट धागे तेट

० + ० २ ०
तेट क्रुधा केट धात्र कधि किट धा गदि गन केड़ना कत् धेट

३ ० + ० २ ०
तेट धग नध–अत धा क्रुधा– आन धा किट तक दिगड़ धा आ

३ ० + ०
धग नध – अत धा क्रुधा–आन धा किटतक दिगड़ धा आ

२ ० ३ ०
धग नध – अत धा क्रुधा–आन धा किट तक दिंगड़

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धमार

राम धा श्याम धा बोल परन २ आवृत्ति

\+ ० २ ०

(२५) तांगड़ धा दिगड़ धा दिं दिं किड़ धा दिगड़ धा किट तक

पढंत— राम धा श्याम धा राधा कृष्णा गोविन धा मुरली

० ३ ०

तड़ धा दिगड़ धा ता

धर धा मोहन धा ता

\+ ० २ ०

आ तांगड़ धादि गड़धा दिंदिं कुधा दिंगड़ धाता गड़धा किटतक तड़धा

पढंत—आ राम धा श्या—म धा राधा कृष्णा गोविन धा मा धवधा मुरली धर धा

३ ०

दिंगड़ धाता गड़धा दिंगड़ (लाला झल्ली मृदंगाचार्य टीकम गढ़)

पढंत— मोहन धा रा—म धा श्याम

मिश्र चतुस्र मिश्रित परन १ आवृत्ति

\+ ०

(२६) किट तक ते टे तेट तकता धा किट धुम किट तक गदि गन नग घेरकेट

२ ०

तक् धेताधेः कत कतेट धिकिट घिन् घितेट घिकेट धा आ तेट कत कतेट धिकिट

३ ०

घिं घितेट धि केट धा आ तेट कत कते टधि किट घिन घितेट धिंकिट

नृत्य परन ३ आवृत्ति

\+ ० २ ०

(२७) धाकिट तक्र धुम किट तक थुंगा नट तका न्ह तक दिम दिग दिग

३ ० + ० २

थेई ताता थेई कड़ान् थेई कड़ान् कुधा केटे झम कत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धमार

० ३ ० + ०
चल तभा–आनु जा पग नू. पुर झन का रक रत दिग दिग

२ ० ३ ०
थेई ई तादिग दिगथो दिगदिग ताता थेई ताता थेई ताता

तिस्र (आड़ी २ आवृति

+ ० २ ०
(२८) कत्त धिकिट तकिट थुकिट धगन नगन धगगे दिगन धात्रक

३ ० + ०
धगन घेटक्क धान घेटक्क धान धा धात्रक धगन घटेक्क धान

२ ० ३ ०
घेटक्क धान धा धात्रक धगन घेटेक्क धान घेटक्क धान

दूसरी २ आवृति

+ ० २
(२९) गदिग नगदी गनग दिगन धा किट तक धुम किट तक

० ३
धिर किट तक तक्क धि किट (तेटकत गदि गन धाधा तेट तक गदि

०
गन धा धा तेट कत गदि गन धाधा धा ३

तीसरी १ आवृति

+ ० २ ०
(३०) धात्रक धिकिट धिकिट तगन कत्रक धिकिट कतक तान

३ ०
धा किट तक धुम किट तक नानाना धा नाना धा नाना धा नाना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धमार

चौथी ३ आवृति

+ ० २ ०
(३१) धिकिट तगन धिकिट तगन कत्रक धिकटि कत टे तगन

३ ० + ०
धाकिट तगन नगन गनग नगते टकत कतेट तगन धगन कत्

२ ० ३ ० +
धगन कत् धाग दिगन (नगन कत्रक धिकिट कतिट तगन धान धा ३

तिहाई सम से सम तक

(३२) (तेट कत गदि गन धा कत गदि गन धा ३

दूसरी

(३३) (कत कधि किट धागे तेट कुधा—आन कत धा ३

शिव परन

+ ० २ ०
(३४) धा किट तक धुम किट तत थुं थुं नाते टेता डिम डिम
दिन दिन

३ ० +
किटतक तागे तिरकिट तकता गदि गडि मक डिम

० २ ० ३ ०
गदि गडि मक डिम डिग डिग वा जत डम रुत तक
दी तेटे दींदीं

+ ० २ ०
थेई — इथे ईत तक धा नट तग अंग धर तक

३ ० + ० २
दीम तक दीम तान् डव गति गत तिधा दिग दिग थे ई
दिन दिन दि दि धा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धमार

० ३ ० +
दिग नधी कीट गन पति वज तमृ दंग धाटिक तक थुम
तिट दीते टत्री
० २ ०
टिक तक धा किट तक धुम किट तक कृधा केटे धिकी टधा–
३ ० + ० २ ०
आन धा–आ–अधा–आन धा कति टक ड़ान धा–आ–अध ड़ान
३ ० + ०
धा धिर किट तक धे–एत धेः गृन थुन् गृन थुन् कुध
२ ० ३ ० +
रन–न्द नी पढ़ तवा–आद गति ना दिर दानि नादिर दानी
तग
० २ ० ३ ०
वी नलि ये मुनि नां रद ठुम कत घूं कक घूं कक
दी तते टे दिन
+ ० २ ० ३
खड़ मुख ता लदे एत एक दो तीन निर खत सुर जन
धटि निट नति टता थुम किट
० + ० २ ०
मुदि तते—आगि गुह थिर कथि रक तत कर तप्र कृति
दीते टेता गत धिर कधि रक त्रि त्रि
३ ० + ० २
सव सन कस नन् दन वद तवि रद वर जै शं कर
० ३ ० + ०
त्रिशू–उल धर शशि धर व्या अ्रच रम धर जय तिदि
२ ० ३ ० +
गं वर फुंक रत फन नन व्या लकं न्ठ धर थर थर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धमार

० २ ० ३ ०
कां पत का लवां—आधि कर जटा—आजू–ऊट धर उच

\+ ० २ ०
रहु यह वर पा—-गल जन नित सुय शगा—-आन कर

३ ० + ०
शंकर कींजै जैशं करकि गौरी पति गिरि जा पति जय शं

२ ० ३ ०
भो जय शं भो जय शं भो ओ गौरी पति गिरि जापति

\+ ० २ ०
जय शं भो जय शं भो जय शं भो ओ गौरी पतिगिरि

३ ० +
जा पति जय शं भो जय शं भो जयशं भो

अथ ताल ध्यानम्

कवित–कनक जटित मणि खचित सिंहासन पैं,
अरुण वरण शोभा विद्युत सी छाई है।
झंपा श्रुति गावत कहावत श्री कांत प्रिय,
समर जुझार अति कीरति सुहाई है॥
गज गामिनी सी पिक वयनी सुनैंन वारी,
दस तिय मृदु हंसि सुख उपजाई है।
ध्यावत सो पावत सकल मन काम निज,
मेटि तीन ताप सब सुख सरसाई है॥ (पागलदास)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

झपताल

झप ताल १० मात्रा ३ ताली १ खाली

ठेका

सम ताली खाली ताली

\+ । २ । । ० । ३ । ।

(१) धा दिन् ता तीट दिन् ता तेट कत गदि गत

भिन्न प्रकार

(२) धा दिम् ता–आ धि ता तेट कत गदि गन

भिन्न प्रकार

(३) धा गे धा गदि गन ता गे ता गदि गन

साथ

(४) धा गे कत्र कधि किट ता तेट कत त्रक धिकि टधान

रेला १ आवृति

\+ २ ०

(५) धा तक धि किट धगे तेट गदि गन कत कधि किट तात्र कति

३

किट तक तेट गदि गन कत कधि किट

रेला २ आवृत्ति

\+ २ ० ३

(६) धग नधी किट धात्र कधी किट धा किट तक थुम किट तक गदि गन

\+ २ ० ३

कते टत गन का तिर किट तक तेटे धा किट तक धुम कित तक गदि गन

साथ १ आवृति

\+ २ ० ३

(७) धग नधि किट धा किट तक धुम किट तकं गदि गन क्रधा

केट तक गदि गन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

झपताल

साथ १ आवृति

(८) + धागे तेट धागे तेट २ तेट तागे तेटे तागे तेट तेट ० कृधा केट धागे तेट

३ तेट गदि गन नगे तेट केट

साथ २ आवृति

(९) + कत्तिट घिगि तीट २ कतान थुन् तड़ आन धा ० दिन्ता केड़ नक

३ तेट कत घेघे तेट तक थूं—आ कत + गदि गन २ कत्तिट कत घेघे

तेट कत ० घेन नद घेग्घे ३ तान धा—आकत गदि गन

सिंहावलोकन २ आवृति

(१०) + धाकि टधा २ किट धाधा किट ० कृधा कीट ३ दिधा किट दीकी

+ टधा दिन्ता २ कृधा दिन्ता तेट कत ० गदि गन धा कत ३ गदि गत

धा कत गदि गन

परन ४ आवृति

(११) + घिं तीर किटतक २ तागे तेट कत ० घेन नद ३ घेघे तिरकिट तकता + गदि गन

२ तकधुम किटतक ० धिला—आन धा आ ३ तेट कत गदिगन + धा आ

२ तकधुम किट तक ० धिला—आन धा आ ३ तेटकत गदिगन + धा आ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

झपताल

२ ० ३
तक धुम किटतक घिला–आन धा आ तेटकत गदिगन

परन २ आवृत्ति

\+ २ ० ३ +
(१२) धाकिट तकिटत का धुम किट तकिटत का (धि ता धिता गदिगन धा ३

तिहाई २० मात्रे में

\+ २ ०
(१३) (दिग नन गन तेट कतिटत–आक तेट धा तेट धा तेट धा ३

परन ४ आवृत्ति

\+ २ ० ३ +
(१४) धा किट तकघुम किटनक धे: धड़–अन नग नग घिन कधि किट

२ ० ३ + २
घिन कधि किट कृधा केट कात्र किधि किट धे: तड़–अन नग नग

० ३ + २
घिंते टेक त्त गदि गन नागे तिरकिट तकता (क धाता धा ३

समा परन ४ आवृत्ति

(१५) तागे तेट केट तागे तेट केट तागे तेट तागे तेटे तागे तेट

\+
(कते टत गन तग तेट कत गदि गन धा ३ आ, दम देकर

समा परन ४ आवृत्ति

\+ २ ० ३ +
(१६) धागे तेट तागे तेट गदि गन नागे तेट कते टत गन तग

२ ० ३ + २
केट तग नधा–आन धा आ किट किट कते टत गन तग

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

झपताल

०　　　３　　　+　　　२　　　०
केट तग नधा—आन धा आ　किट किट कते टेत गन तग

३
केट तग नधा—आन　(श्री रामदास जी मृदंगाचार्य)

समा परन ४ आवृति

+　　　२　　　०
(१७) तागदिग तागे तेट तागे दिग तागे तेट तग नध गन धागे दिग तागे

३　　　+　　　२
तेटकत तगन्न तागेतेट तागे दिग (तागे तेट तगन्न तागे तेट

०　　　３　　　+
तागे तेट गदिगन धा गदिगन धा गदिगन धा ३

परन ४ आवृति

+　　　२　　　०　　　३
(१८) किट तक थुंथुं नते टेता–आधा दिन्ता कृधा दिन्ता कते टेधा

+　　　२　　　०　　　३　　　+
कते टेधा—आथु–न्ता धाथु न्ता धाथु न्ता धा किट तक ता

२　　　०　　　३　　　+
कते टेधा–आथु–न्ता धाथु न्ता धाथु न्ता धा किटतक ता

२　　　०　　　３
कते टेधा– अथु न्ता धाथु न्ता धाथु न्ता।

स्रोता गता ४ आवृति

+　　　२　　　०　　　३
(१९) दि किट किट तक दिके टेघिर किट तक धित्ता कृधा कृधा तेटकत

+　　　３　　　०
गदि गन धाकिट तकधुम किट तक थुंगा तक तक तक्का थुंगा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

झपताल

३ + २
(तकिटत का धुम किटतक गदिगन धा–अधा गदिगन धा ३

(स्रोता गता की चाल नदी के आकार की होती हैं)

तिहाई सम से सम तक

\+ २ ० ३
(२०) तेटकत गदिगन धाती धा तिट कतगदि गनधा तिधा तेटकत गदिगन धाती

पीपिलिका ६ आवृति

\+ २ ० २ + २
(२१) धग नधा–अत किट–धाआ दिग–नधा–आन गन धा ता धा केड़नक

० ३ + २
ति धा कते टेक तेट धिरधिर किर्टतक ता तिर किटतक कत–आक

० ३ + २
तआ—कत—आधा—आता–आन धाआ–ताआ–नधा–अता–आन धा

० ३ + २
कत—आक—तआ—कत—आधा—आता—आन धाआ–ताआ–नधा–

० ३ + २
आता–आन धा कत—आक तआ कत—आधा—आता—आन

० ३
धा आ—ताआ—नधा—आता—आन

परन २ आवृति

\+ २ ०
(२२) धागे तेट तागे तेट धात्र कधि किट धेट ता कत गदि गन धा गदि

३ + २
गन धा गदि गन धाता कत गदि गनधा गदि गन धा गादि

० ३
गनधा ताकत गदिगन धागदि गन धा गदि गन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

झपताल

। सार्थक (अर्थ संहित) परन ६ आवृति

+ २ ० ३ +
(२३) गं गा† धर क्रो धित त्रिने† त्र धध कत धध कत दिग

२ ० ३ + २
निना—आद दं तन तून† धरि धर त्रै तल नट कुध रग

० ३ + २
गन तर† कत गो तन धरि धर नीं तकि तकि त्रा

० ३ + २ ०
नक- अत धा—आ—धा धर नी तकि तकि आ नक — अत

३ + २ ० ३ +
धा—आ—धा धर नि तकि तकि त्रा नक—अत धा आ धा धा

॥ दूसरा ४ आवृति चौपाई में

+ २ ० ३
(२४) किट किट—आत किल कत धा ते धर । क्रोधित ता निता आ निदे† ते कर ॥

+ २ ०
कट तका†—आन धर त्रोननं दन ते । धमकिध रनि दनु† काटिर† दनते ॥

३ + २
तनत ते—एग तन धर धर धर कत । रन धर नीं ना त्रान धा करकत† ॥

० ३ ० +
दैत्य क†—दन दे करु नां दाना । दीन धा—आम नित दान नि धाना ॥

२ ० ३
काट दी—न्हकटु ताता काट दी—न्ह कटु ताता काट दी नृह कटु ता ॥

। यह सार्थक परन शंकर जी जिस तरह कामदेव को जलाये हैं, उन्हीं भावों से भरा है † गंगाधर—शंकर जी=त्रिनेत्र-तीन आंख=† तृनधरि पृथ्वी † तरकत—कूदना=॥ यह राम रावण युद्ध से सम्बन्धित है । † धाते धर—दौड़कर पकड़ना= * देते कर—मारते हैं † कान धर—मस्तक † त्रोण नंदन—वाण † दनु—राक्षस† रदन—दांत † कदन नाश कर्ता ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

झपताल

तिस्र (आड़ी) २ आवृत्ति

+ २ ० (२५) धा किट धा किट ता किट तगन न केट त गन (धि किट

३ + तगन धुम किट तक धुम किट तक । ३

आड़ी

+ २ (२६) धा किट तक धुम किट तक धुमकिट तक धा किट तक तग नग धग

० ३ दिन्ताकत् नग नड़ान धुम किट तक धा किट तक धुम किट तक

+ २ ० धा गदि गन धात्ती धा किट तक धुम किट तक धाग दि गन धाती

३ धा किट तक धुम किट तक धाग दिगन धात्ति

अथ ताल ध्यानम्

दोहा—गति श्रवरेव सुजान जेहि, गावत सुनत रसाल ।
आभूषण युत सुघर तन, केशरं पुण्ड्र सुभाल ॥
ललित लगन निज वल्लभा, पंकज नयन विशाल ।
युगल चरन पंकज नमत, जयति अड्ड चौताल ॥ (पागल दास)

आड़ा चौताला मात्रा १४ ताली ४ खाली ३

ठेका

	सम		ताली		खाली		ताली		खाली		ताली		खाली	
	+		२		०		३		०		४		०	
(१)	धा	आग	धा	गे	दिं	ता	तिट	धा	दिं	ता	तिट	कत	गदि	गन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आड़ा चौताला

बदला हुआ

\+ २ ० ३ ० ४ ०

(२) धा दिं ता तिट धा दिं ता कत् धा ता तेट कत गदि गन

साथ १ आवृति

\+ २ ० ३

(३) धा टिक तकुधुम किटतक गदिगन नग तिर किटतक ता तीर किटतक

० ४ ०

घिं तिर किटतक तिरकिट तकता तेटकत गदिगन

तिहाई

(४) तिरकीट तकता तेटकत गदिगन धा ३

परन २ आवृति

\+ २ ० ३ ० ४

(५) किट तक ते टे तिर किट तक ता तंग तिर किट तक

० + २ ० ३ ० ४ ०

तेट कत गदि गन धा आ तेट कत गदि गन धा आ तेट कत गदि गन

परन २ आवृति

\+ २ ० ३

(६) कत कत् तेट तेट कते टक तागे तेट कते टक तागे तेट कात्रि किटतक

० ४ ०

तागे तेट (किटतक तागे तेटकत कतेटत गनतग तेटकत गदिगन धा ३

मृदंगा परन २ आवृति

\+ २ ० ३ ०

(७) धागे तिट घड़ान नगतिर किटतक तिरकिट तकता—आन धा ता कथुं

४ ० + २ ०

गां धा गे दिग ता धेत्ता गदिगन नग तिर किटतक तिरकिट

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आड़ा चौताला

	३			०		४		०	
तकता	तेटकत	गदिगन	धा	तेटकत	गदिगन	धा	तेटकत	गदिगन

(मृदंग आकार में यह उक्त परन है)

परन२ आवृति

	+		२		०		३
(८)	धागे तेट	गदिगन	तागे तेट	गदिगन	कृधा केर्ट	गदिगन	नागे तेट

०		४		०		+
गदिगन (तकधुम	किटतक	गदिगन	धा गदि	गनधा	गदिगन	धा ३

परन ४ आवृति

	+	२		०		३		०
(९)	कता—आन	किटतक	धेः	धाकिट	तकधुम	किटतक	थुन्	नाना

	४		०		+	
किटतक	तगतिर	किटतक	तिरकिट	तकधिर	किटतक	गदिगन

२	०		३		०	
धा कड़—आन्धा	त्तिधा	किटतक	धातिर	किटतक	तातिर	किटतक

४	०		+		२
तिर तिर किटतक	तिर तिर	किटतक	धिर धिर	किटतक	धिरधिर

	०		३			४
किटतक	धिरकिट	घेड़नग	नगतिर	किटतक	(धेः तागे	तिरकिट

	०		+
तकता	तेटकत	गदिगन	धा ३

परन १ आवृति

	+		२		०
(१०)	कृधान	कत् धाकिट	तक धुम किटतक	कृधाकेट	धा गदि

	३	०	
गनधागे	तेटकृधा—आन थुंगा	तकतक थुंगा	तका थुंगा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आड़ा चौताला

४		०	
तकतक थुंगा	धा तकतक	थुंगा धा	तकतक थुंगा

परन १ आवृत्ति

	+			२			०		३
(११)	धाकिट	तकिटत	का	धुमकिट	तकिटत	का	तेटकत		

०		४			०	
गदिगन	धा	तेटकत	गदिगन	धा	तेटकत	गदिगन

परन २ आवृत्ति

	+		२		०		३	
(१२)	धाकिट	तकधुम	किटतक	गदिगन	नगतिर	किटतक	तगतिर	किटतक

०		४		०		+	
तिरकिट	तकता	तेटकत	गदिगन	घि तिर	किटतक	तगतिर	किटतक

२		०		३
तिरकिट	(ताधा	किटतक	दिंगड़	धा ३

परन २ आवृत्ति

	+		२		०		३		०	
(१३)	धा	किट तक	थुंगा	तक्का	थुंगा	तक तक	थंगा	क्रधा	किट	क्रधा

४		०		+		२	
दिन्ता	तक धुम	किटतक	तका	तक्का	थुंगा	धाता—आन्धा	

०		३	०	
तड़ धा	किटतक दिगड़	धाता—आन्धा	तड़धा	किटतक दिगड़

४	०	
धाता—आन्धा	तड़धा	किटतक दिगड़

सिंहावलोकन २ आवृत्ति

	+		२		०		३		०	
(१४)	धाके	टधा	किट	धाधा	किट	क्रधा	किट	दिधा	किट	दिकि,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आड़ा चौताला

४ ० + २ ०
टधा दिंता कृधा दिता कधा दिंता त्तकेट केट घेघे तेट घेघे

३ ० ४ ०
ता दिग ता गदिगन धा किट दिगता गदिगन धाकिट दिगता गदिगन

स्रोता गता परन २६ मात्रे में

२ ० ३
(१५) कृधान कृधनन धाकिट तक धुम किट तक धा ति धा तकधुमकिट तक

० ४ ० +
गदिगन धा ताधा ताधा ताधा गदिगन धा कत कृधा—धान तिरकिट

२ ० ३
तकतान धा तिरकिट तकतान धा किट तक धुम किट तक धाती धा धा ति धाधाकिट

० ४ ०
तकधुम क्रिटतक धातिधा धातिधा धाक्रिटतकधुम क्रिट तक धाति धाधाति

आड़ि २ आवृति

+ २ ० ३ ०
(१६) धागते टतेट तागते टतेट धाग दिं दीन् नगते टतेट (कत्त

४ ० +
धिकिट तकिट तान ताक्र धान धा ३

तिहाई

(१७) धाकिट तकधुम किट तक थुंगा धा थुंगा धा थुंगा धा।

ठेका तीन ताल १६ मात्रा तीन ताल १ खाली

+ २ ० ३
(१) धा धा दि न्ता आ धा दि न्ता क ते टे धा तेट कत गदि गन

+ २ ० ३
(२) धा धिट धिट धा आ धिट धीट धा धा तिट तिट ता आ धिट धिट धा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आड़ा चौताला

ठेका तेवरा ७ मात्रा ३ ताली (खाली नहीं पड़ती)

	+			२		३
(१)	धा	दि	न्ता	तीट	कत	गदि	गन

(नोट—१४ मात्रे के सभी बोल बजेंगे)

ठेका शूल १० मात्र ३ ताली २ खाली

	+		०		२		३		०	
(१)	धा	श्रा	दीन्	दीन्	ता	श्रा	तीट	कत	गदि	गन

(नोट—झपताल के बोल सभी बजेंगे)

नोट— मृदगाध्याय के सात तालों में चार तालों का विशेष रुप देकर, तीन तालों को केवल संकेत से ही सूचित किया है ? पुस्तक बड़ी होने की सम्भावना है, यदि हरि इच्छा हुई तो दूसरे भाग में इन्हीं तीनों का विस्तृत रुप दिया जायेगा ? चार ताल के अतिरिक्त तीन तालों में कुछ पाठ कठिन सा हो गया है, किन्तु जो चार ताल का अध्यन करलेगा उसको सरल हो जायेगा (शेष त्रूटियों की क्षमा) —भगवानदास

सद्वाक्य

स्वर्गीय पुरोहित श्री लल्ला जी संगीतज्ञ

(बिजनौर)

गुणियों की सेवा द्वारा श्री सरस्वती महारानी की मेरे स्थान पर सदा
उपासना होती रहे। गायक स्वरकार तथा वादक लयकार है, दोनों
का आपस में जब सुन्दर संयोग होता है तो "परमानन्द"
का नद प्रवाहित होकर उस परम पुरुष के पुनीत पद-
पंकज में जाकर लीन हो जाता है। रामशरण
इससे अधिक सुख प्राप्त करने के लिये तू
कहां-कहां भटकता फिरेगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तबला अध्याय

'गुरू शिष्य सम्वाद' में तबला का विषय भी मैंने लिख दिया है, किन्तु मृदङ्ग की अपेक्षा तवले में उदारता कम है ? क्योंकि मृदङ्ग में बायें और दायें का स्वर मिश्रित होकर निकलता है और तबले का अलग-अलग ? यद्यपि गुणियों ने तवले का वाद्य पूर्वीय तथा पश्चिमीय दो भागों में विभक्त कर दिया है तथापि हस्त कुशलता से दोनों ही सुन्दर प्रतीत होते हैं ? तवला में बोलो के नाम वर्तमान समय के होंगे । (मृदङ्ग की परनें अपने नाम चाल से प्राचीनता की झलक दिखा रही हैं, गुरुओं की बताई रीति के अनुसार ही उन्हें लेखन पद्धति से नियंत्रित करके प्रकाशित किया गया है) प्रस्तुत पुस्तक को "तवला विज्ञान" के नाम से प्रकाशित करने का विचार था, किन्तु मित्रों की ऐसी राय हुई कि मृदंग का भी भाग होना चाहिये, जिससे पाठकों का युगल लाभ हो । मृदंग की तरह तवला में भी सात अक्षर प्रधान हैं—बांया, दांया, बन्दः खुला, चल और अचल में मृदंग ही जैसा इनका भी रूप है । मृदंग थाप और तबला चांट प्रधान हैं । अस्तु हथौटी में अन्तर पड़ने के कारण निकालने में भी अन्तर पड़ जाता है । तबला में शब्द निकालने का संकेत करना यहां उचित है । दाहिने को लोग दो अंगुली से बजाना अच्छा समझते हैं और है भी, दाहिने में कनिष्ठा तथा अंगूठा बजाने में उदासीन रहते हैं । किन्तु इन दोनों के विना तवला बजना भी कठिन है ? अस्तु दाहिने में इनका प्रयोजन केवल साथ में पड़ता है—और बांये में बहुधा लोग चार उंगली और गदेली से भी सहारा लेकर बजाते हैं, इसमें जिसका जैसा अभ्यास पड़ जाय ?

निष्कासन विधि

ध—घ और ता को साथ आघात करने से बनता है, चाहे थाप से चाहे चांट से ।

ता—पंजा सीधा करके दाहिने की स्याही के सामने हिस्से पर आघात करे, कनिष्ठा या अनामिका दोनों में से एक दब जाय, इसे थाप भी कहते हैं । दूसरा, तर्जनी से लंव, चांट, मिश्रित ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ना—दाहिने की तर्जनी के अग्रभाग से चांट पर आघात करे, किन्तु लवस्थान के सम्पर्क से ता बन जायेगा।

न—स्याही के अंश से मध्यमा अथवा अनामिका द्वारा बनता है।

तिटि—दाहिने में बन्द बजेगा, इसे सीधा तिटि, उलटा टिति दोनो प्रकार से बजाते हैं, पढंत में अन्तर नहीं पड़ता।

तिरकिट—"तिर", तिट के समान, "कि" बाये से बन्द, और "ट" ति के समान बजेगा।

धिन गिन—'धि' तर्जनी से दिं और बायें से घ एक साथ, "न" मध्यमा और अनामिका से "गि" वायें से "न" पुनः उसी प्रकार धि और न लव तथा स्याही के आस सहित बजेंगे।

धिड़ नग—"घि" वायें से "ड़" ति की तरह न चांट से (किनारी से) "ग" बांयें से। (बायें में उगली बदला करे)

किड़नक—धिड़नक के समान बजेगा, किन्तु बायें का आघात बन्द बजेगा, घि, ग, क, की तरह।

तिन किन—धिन गिन के समान बजेगीं, किन्तु बायें का आघात बन्द, उक्त रीति से रहेगा।

तूना—"तू" दाहिनी तरफ लव स्थान पर एवं "ना" चांट (किनारी) पर

धागे—ग तथा ता के संयोग से "धा" और गे बायें से खुला बजेगा।

(नोटः— घ तथा ग का बन्द बायें में क बजेगा और दाहिने में 'ध' का 'त' बन्द बजेगा।)

तागे—'ता' दाहिने से 'गे' बायें से।

दिन्—मोहरे आदि में स्याही पर चारों उंगली से खुला बजेगा, और चांट के बाज में तर्जनी से लव स्याही मिश्रित बजेगा। न् हलन्त हो जायेगा, (आश में चला जायेगा) दिन्, तड़, लड़, दिङ, चारों यह एक ही प्रकार से बजेंगे, (उलटा भी सीधा भी समयानुसार) इन चारों में द, घ मिला देने से धिन धिंड़ धिङ का रूप बन जायेगा।

धड़ धिन—'ध' दहिनी चांट पर 'घ' और त मिलाकर, मध्यमा, अनामिका से 'ड़' बनेगा, तथा बायें से 'घि', न दाहिने की चांट से।

तड़किन—बांया बन्द करके धड़गिन की तरह बजेगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तेटकत—तिरकि—की तरह "तेटक" बजेगा, और 'ता' दाहिने से (आसदार)।

धिर—दाहिनी हथेली का दहिना हिस्सा, और बायें से 'घ' एक साथ बजाने से "धि" होगा, और हथेली के बायें भाग से र बजेगा। (बायें में उंगली बदला करे)

त्रक—त्रक में तिरकिट का "क" दाहिने में ट का स्थान ग्रहण करके क बजता है। जिसका शुद्ध रूप हैं, "त्रत", अर्थात् तबला तैयार होने पर तिरकिट का अपभ्रंश त्रक बनता है।

थुन्—दिन् की तरह चारों उंगलियों से स्याही पर।

धाड़ा—"धा" ता और घ के संयोग से चांट पर, और ड़ा दो प्रकार से (१) मध्यमा तथा अनामिका दोनों से लव पर, (२) तर्जनी को लव स्थान पर 'त' के समान करने से।

नाड़ा—धाड़ा के समान बांया रहित बजेगा।

किटतक—किड़नक के न को थोड़ा नीचे कर देने से बन जाता है।

तक् तत् दित्—दाहिनी स्याही पर चारों उंगलियों से बन्द आघात करे।

तित्—मध्यमा से स्याही पर बन्द, अथवा लव पर तर्जनी से बन्द करके बजावे।

धेत्—दित् में घ मिला देने से बन जाता है।

घड़ा—बायें से घ और दाहिने से ता आगे पीछे मारने से बनता है। (शुद्ध रूप "घता")

कड़ा—बायें से क और दाहिने से ता आगे पीछे मारने से बजता है (शुद्ध रूप 'कता')

तड़न्न—"त," मध्यमा अनामिका से चांट पर, ड़ तर्जनी से तथा "न्न" पुनः दोनों से।

किड़ धा—किट धा की तरह बजेगा।

गदिगन— 'ग' बायें से 'दि' दाहिनी की स्याही से, पुनः 'ग' बायें से और न दाहिने की मध्यमा के अग्रभाग से स्याही पर। (इतना अभ्यास हो जानें पर सभी सरल है।)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ ताल ध्यानम्

रक्त वर्ण पीताम्वर कानन कुन्डल सोहें।
षट तिय संग विराजत दण्ड मुकर मन मोहें।।
आस पास सहचरि चामर ले मृदु हलरावें।
देव यक्ष गन्धर्व किन्नरादिक गुण गावें।।
पूर्ण करत मन कामना, उज्वल कीर्ति ललाम।
आदि ताल पद कमल सादर करत प्रणाम।। (पागल दास)

तीन ताल १६ मात्रा ताल ३ खाली १

ठेका

	सम				ताली			
	+	।	।	।	२	।	।	।
(१)	धा	धिन्	धिन्	धा	धा	धिन्	धिन्	धा
	खाली				ताली			
	०	।	।	।	३	।	।	।
	धा	तिन्	तिन्	ता	ता	धिन्	धिन्	धा

बदला हुआ

	+				२			
(२)	धा	त्रक	धिन्	धा	त्रक	धिन्	धाधा	तिन्
	०				३			
	ता	त्रक	तीन्	ता	त्रक	तिन्	धाधा	धिन्

बदला हुआ

	+				२			
(३)	धाग	धिंग	धिंग	धाग	धाग	धिंग	ग तिर	किटतक
	०				३			
	ताक	तिक	तिक	ताक	ताग	धिग	गधिर	किटनक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीन ताल

बदला हुआ

	+				२			
(४)	धा	तिरकिट	धिन्	धा	धा	धिन्	धिन्	धा
	०				३			
	धा	तिरकिट	तिन्	ता	ता	धिन्	धिन्	धा

बदला हुआ

	+				२			
(५)	धा	धिन्	धा	तिरकिट	धा	तिरकिट	धिन्	धा
	०				३			
	धा	तिन्	ता	तिरकिट	ता	तिरकिट	धिन्	धा

बदला हुआ

	+				२			
(६)	तिरकिट	धिन्	धा	धिन्	आ	धा	धिन्	धा
	०				३			
	तिरकिट	तिन्	ता	तिन्	आ	धा	धिन्	धा

बदला हुआ

	+				२				०				३			
(७)	धिन्	धा	धिन्	धा	धा	धिन्	आ	धा	तिन्	ता	तिन्	ता	ता	धिन्	आ	धा

बदला हुआ

	+				२				०				३			
(८)	धा	धिन्	धा	धा	धिन्	धा	धिन्	धा	धा	तिन्	ता	ता	धिन्	धा	धिन्	धा

बदला हुआ

	+				२			
(९)	धिन्	धा	रकिट	धिन्	आ	तिरकिट	धिन्	धा
	०				३			
	तिन्	ता	तिरकिट	तिन्	आ	तिरकिट	धिन्	धा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीन ताल

ठेका का तिगुन

\+ ० २

(१०) धाधिंधि धाधाधि धिधाधा तितिता ताधिंधिं धाधाधिं धिधाधा धिंधिंधा

० ३

धातिंतिं ताताधिं धिधाधा धिंधिंधा धाधिंधिं धाधातिं तिंताता धिंधिंधा

नोटः— यद्यपि चार ताल के ठेके द्वारा लयो का क्रम लिखा जा चुका है, तथापि तीन ताल का ठेके द्वारा तिगुन एक ऐसा विषय है, जो लिखने में कहने में सरल किन्तु करने में कठिन है। उक्त लेखन पद्धति द्वारा बरतने में सरल होगा।

कायदा नं० १

\+ २ ० ३

(११) धा धा ति टि धा धा तू न्ना ता ता ति टि धा धा तू न्ना

\+ २

(१२) धाति टीधा तूना धाति टिधा तून्ना धाधा तून्ना।

० ३

ताति टिता तूना ताति टीता तून्ना धाधा तून्ना॥

\+ २

(१३) तिटि धाति धातु नाधा धातू नाति टिधा तूना।

० ३

तिटि ताती तातू नाता तातू नाति टीधा तूना॥

\+ २

(१४) तूना धाति धाति टींधा तूना धाति धाति टीता।

० ३

तूना ताति ताति टिता तूना धाति धाति टिधा॥

\+ २

(१५) धति टिति टिधा तिटि धातू नाधा तिटि धाति।

० ३

ताति टिति टीता तिटि धातू नाधा तिटि धाति॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीन ताल

	+				२			
(१६)	तीटि	धातू	नाधा	तिटि	धाधा	तिटी	धातू	नाता ।
	०				३			
	तिटि	तातू	नाता	तिटि	धाधा	तिटि	धातू	नाधा ॥
	+				२			
(१७)	तूना	धाति	टिधा	तिधा	तिटि	तिधा	तिधा	तूना ।
	०				३			
	तूना	ताति	टिता	तिता	तिटि	तिधा	तिधा	तूना ॥
	+				२			
(१८)	धाति	टिधा	तूना	धाति	धाति	टीतू	नाधा	तिटि ।
	०				३			
	धाति	टितू	नाधा	तिटि	धाति	टितू	नाधा	तिटि ॥

कायदा नं० २

(५६) + धा धा तिर किट २ धा धा तू न्ना । ० ता ता तिर किट ३ धा धा तू न्ना ॥

(२०) + धा तिर किट धा २ तिर किट धा तिर ० किट तक तिर किट ३ तक धा तू ना ।

\+ ता तिर किट ता २ तिर किट ता तिर ० किट तक तिर ३ किट तक धा तू ना ॥

(२१) + तिर किट धा तू २ ना धा तिर ० किट धा तू ना धा ३ तिर किट धा ता ।

\+ तिर किट ता तू २ ना ता तिर किट ० धा तू ना धा ३ तिर किट धा धा ॥

(२२) + धातिर किटतक तूना किटतक २ किटतक धातू नाधा तिरकिट ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीन ताल

०　　　　　　　　　　　　　　　　　३
धातिर किटधा–आधा तिरकिट　　धातिर किटधा–आधा तूना ॥

\+　　　　　　　　　　　　　　　　　२
तातिट किटतक तूना किटतक　　किटतक तातू नाता किटतक ।

०　　　　　　　　　　　　　　　　　३
धातिर किटधा–आधा तिरकिट　　धातिर किटधा–आधा तूना ॥

\+　　　　　　　　　　　　　　　　　२
(२३) धातिर किटतू नाधा तिरकिट　　धातिर किटधा तिरकिट धातू ।

०　　　　　　　　　　　　　　　　　३
नातू नातरि किटधा तूना　　धातू नाधा तिरकीट धाता ॥

\+　　　　　　　　　　　　　　　　　२
तातिर किटतू नाता तिरकिट　　तातिर किटता तिरकिट तातू ।

०　　　　　　　　　　　　　　　　　३
नातू नातिर किटधा तूना　　धातू नाधा तिरकिट धाधा ॥

कायदा नम्बर ३

\+　　　　　　२　　　　　　　　०　　　　　　３
(२४) घिड़ नग तिट तिट घिड़ नग तू ना । किड़ नक तिट तिट घिड़ नग तू ना ॥

\+　　　　　　　　　　　　　　　　　२
(२५) घिड़गन धातिट घिड़नग तूना　　धातिर किटधा घिड़नग तूना

०　　　　　　　　　　　　　　　　　३
किड़ नक तातिट किड़नक तूता　　धातिर किटधा घिड़नग तूना ॥

\+　　　　　　　　　　　　　　　　　२
(२६) तिटघिड़ नगधा तिटघिड़ नगतिट　　घिड़नग तिटघिड़ नगधा तूना ।

०　　　　　　　　　　　　　　　　　३
तिरकिड़ नकता तिटकिड़ नकतिट　　घिड़नग तिटघिड़ नगधा तूना ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीन ताल

(२६) + घिड़नग तिटतिट घिड़नग तिटतिट २ घिड़नग धातिट घिड़नग तूना

० किड़नक तिटतिट किड़नक तिटतिट ३ किड़नक धातिट घिड़नग तूना

(२७) + घिड़नग धातिर किटधा तिरकिट २ तकघिड़ नगधा तूना घिड़नग

० किड़नक तातिर किटधा तिरकिट ३ तकघिड़ नगधा तूना घिड़नग

रेला (प्रवघी)

(२८) + धातिर किट घिड़ २ नग तिर किट तक ० ता तिर किट घिड़ ३ नग धिर किटतक

(२९) + धा तिर किट घिड़ नग तिर किट घिड़ २ नग तिर किट घिड़ नग तिर किट तक ।

० ता तिर किट किड़ नक तिर किट किड़ ३ नक तिर किट घिड़ नग धिर किट तक ॥

(३०) + धा तिर किट घिड़ नगतिर किटतक २ धिर धिर घिड़नग ता तिर घिड़ नग ।

० ता तिर किट किड़ नग तिर किट तक ३ धिर धिर घिड़नग ता तिर घिड़ नग ॥

(३१) + धा तिर घिड़नग तिर किट तक तिर २ किट तक घिड़नग धिर धिर घिड़ नक ।

० ता तिर किड़नक तिर किट तक तिर ३ किट तक घिड़नग धिर धिर घिड़ नग ॥

(३२) + धिन धिन गिन धाता २ धिन धिन गिन धाता । (मेरठ)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीन ताल

० ३
धिन तिन किन ताता किन धिन गिन धाता ॥

\+ २
(३३) धाता धिन धिन गिन धाता धिन धिन गिन ।

० ३
धाता किन तिन किन ताता किन धिन गिन ॥

\+ २
(३४) घेड़नग तिरकिट तागतटि घेड़नग तागे तिट घेड़नग तिर किट तागे तिट

० ३
केड़नक तिरकिट तागे तिट केड़नक तागे तिट घेड़नग तिरकिट ताग तिट ॥ (दिल्ली)

\+ २
(३५) धेड़नग धा तिर किट ता घेड़नग धातिर किटता धातिर किटता ।

० ३
केड़नक ता तिर किटता किड़नग धातिर किटता धातिर किटता ॥ (बनारस)

\+ २
(३६) तिर किट ता घेड़नग तिरकिट ताग तिट धेड़नग तागे तिट घेड़नग ।

० ३
तिर किट ता केड़नक तिरकिट ताग तिट घेड़नग तागे तिट घेड़नग ॥ (बनारस)

नोटः—चांट के बाज में अधिकतर खुला तथा बन्द बजाने का नियम है ।

उदाहरणः—धाड़ धा घिन । ताड़ ता घिन ॥

कायदा नं० ५

\+ २ ०
(३७) धा धा ति टि धागे तेट गदि गन धग नधा तिरकिट धिट

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीन ताल

३ धा तिर किटतक धिर धिर किटतक । + तकि टत किट तक २ तकतिर किटतक

तूना किट तक ० धागे तेट गदि गन ३ धागे तिरकिट तूना किट ।

+ ता ता ति टि २ ताके तेट कदि कन ० तक नता तिरकिट तिट ।

३ ता तिर किटतक धिर धिर किटतक + तकि टत किट तक तकतिर,

किटतक तूना किटतक ० धागे तेट गदि गन ३ धागे तिरकिट तूना किट ॥

(नोटः—उक्त क़ायदा गया ज़िले से प्राप्त ।)

उठान १ आवृति

(३८) + ति तां आ धिन २ ति तां तिंट तां ता ० घेघे तेट तेट ३ ताकिट तकता किटतक तिट ।

मुखड़ा ८ मात्रे में

(३९) ० कृता–आन किड़नक ३ तिरकिट ताता तिरकिट तकतिर किटतक ।

दूसरा १ आवृति

(४०) + धग नत गन नग २ नग तिरकिट तकधिर किटतक ० धा ।

अधिर किटतक धा ३ धिरकिट तकधा अधिर किटतक ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीन ताल

तीसरा खाली से

+ २
(४१) तिरकिट घिड़नग तिरकिट धाधिड़ नगतिर किटधा घिड़नग तिरकिट ।

चौथा तेरह मात्रे से

३
(४२) ना तिरकिट तकता तिरकिट ।

छठा आड़ी मे ६ मात्रे से

० ३
(४३) धाधि नाकिटतक तिरकिटतक तातिरकिट धिनग धात्रक धिनग धात्रक ।

(मध्य प्रदेश से प्राप्त)

तिहाई चक्रदार आड़ी में

+ २
(४४) ❀ तकतू नाकिटतक तिरकिटतक तातिरकिट किड़नकतू नाकिड़नक तिरकिटतक

०
धिरकिटतक धाति धाति धा ३ ।

मोहरा १ आवृति से

+ २
(४५) धिरधिर किट तक तातिर किटतक–तघड़–आनतक धिरधिर किटतक ।

० ३
ताति न्ति ना तातिन् ति नां ताति न्ति । (बनारस से प्राप्त)

मोहरा १ आवृति

+ २ ०
(४६) धाधि न्धा घिन् धाधिन् धातिर किटतक धिरधिर किटतक तिरकिट तकता

३
तिरकिट धाधिन् धातिर किटधा धिरधिर किटतक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीन ताल

उठान खाली से

०   ३   +   २

(४७) ना तिन् ति नाना तिना तिन् तिन् तेट तग ता—श्रा कत कत् ती

०   ३

तागे तेट तिरकिट तकतिर किटतक तिरकिट तकतक तिरकिट तकतिर किटतक

लग्गी अवधी

+   २   ०   ३

(४८) धा ति ट घि न ड़ कि न । ता ति ट घि न ड़ घि न ॥

+   २

(४९) धाति टघि तिटि धाति धाति टघि नड़ किन ।

०   ३

ताति टिता तिटि ताति धाति टघि नड़ घिन ॥

+   २

(५०) धाति टघि नधा तिट धाति टघि नड़ किन ।

०   ३

ताति टकि नता तिट धाति टघि नड़ घिन ॥

+   २

(५१) घिन धाति टघि नड़ धाति दघि नड़ किन ।

०   ३

किन ताति टकि नड़ धाति टघि नड़ घिन ॥

+   २

(५२) घिन ड़धा तिट घिन ड़धा तिट तिट किन ।

०   ३

किन ड़ता तिट किन ड़ता तिट तिट घिन ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीन ताल

३ + ० २
(५३) तिट धाति टघि नड़ घिन धाति टधा तिट ।

० ३
घिन ड़घि नधा तीट धति टघि नड़ घिन ॥

द्रुत में

+ २
(५४) घिन धाति टघि नड़ धाति टघि नड़ धाति,

० ३
टघि नड़ धाति धा धाति टघि नड़ घिन ।

+ २
किन ताति टकि नड़ ताति टकि नड़ ताति,

० ३
टघि नड़ धाति धा धाति टघि नड़ किन ॥

+ २
(५५) धाति टघि नड़ घिन घिन धाति टघि नघि ,

० ३
नधा तिट धाति टघि नड़ घिन नाधा तिट ।

+ २
ताति टकि नड़ किन किन ताति टकि नकि,

० ३
नधा तिट धाति टघि नड़ घिन नाधा तिट ॥

+ २
(५६) धाति टघि नत घिन घिन धाति टघि नाति,

० ३
टघि नाति टिघि नाति टघि नड़ किन ता ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीन ताल

\+ ताति टकि नत किन २ किन ताति टकि नति ,

० टघि नति टघि नति २ टघि नड़ घिन धा ॥

(५७) + धाति टघि नधा तिट घिन २ धाति टघि नड़

० तिट धाति टधा तिट ३ धाति टघि नड़ किन

\+ ताति टकि नता तिट २ किन ताति टकि नड़

० तिट धाति टधा तिट ३ धाती टघि नड़ घिन

(नोटः—इसमें तिट का प्रयोग उलटा होगा।)

अवधी, आड़ की गतें

(५८) + घिनघि नधा घिनधा—आतिट २ घिनघि नतिट घिनघि नधा ।

० घिनति टतिट घिनति टघि ३ न्नड़ घिन्नड़ घिन्न ड़घिन ।

\+ किनकि नता किन ता अतिट २ किनकि नतिट किनकि नता ।

० घिनति टतिट टघि घिनति ३ न्नड़ घिन्नड़ घिन्न ड़घिन ॥

(५९) + तिटति टधा तिटति टता २ तिटति टधा तिट ताधा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीन ताल

०　　　　　　　　　　　　　　३
धाधा　तिट　घिनति　टघिन　धाति　टघिन　तिटघि　नतिट ॥

+　　　　　　　　　　　　　　२
तिटति　टता　तिटतिट　ता　तिटति　टता　तिट　ताधा ।

०　　　　　　　　　　　　　　३
धाधा　तिट　घिनति　टघिन　धाति　टघिन　तिटघि　नतिट ॥

+　　　　　　　　　　　　　　२
(६०) तिटति　टघिन　तिटघि　नतिट　तिटति　टघिन　धतिट　तातिट ।

०　　　　　　　　　　　　　　ड
घिनति　टघिन　धा ति　टघिन　तिटघि　नाड़　धाघि　नाड़ ॥

+　　　　　　　　　　　　　　२
तिटति　टकिन　तिटकि　नतिट　तिटति　टकिन　तातिट　तातिट ,

०　　　　　　　　　　　　　　३
घिनति　टघिन　धा ति　टघिन　तिटघि　नाड़　धाघि　नाड़ ॥

+　　　　　　　　　　　　　　२
(६१) तिटति　टघिन　तिटघि　नतिट　घिनधा　घिन　तिटघि　नधा

०　　　　　　　　　　　　　　३
धाति　टतिट　घिनधा　तिट (तिटघि　नाड़　धाघि　नाड़　धाघि　नाड़　धा ३

मोहरा ४ आवृत्ति में

+　　　　　　　　　　　　　　२　　　　　　　　　　　　०
(६२) तूना　किड़नक　तिरकिट　तकता　तिरकिट　तकधा　दिन्ता　किटतक　कड़ान्

　　　　　　　　　३　　　　　　　　　　　　　　+
किड़नक　तूना　किटतक　(ताकिट　तकधा　दिन्ता　किटतक　धा　किटतक　ताकिट

　　२　　　　　　　　　　　　　３　　　　　　　　　　　　३
तकधा　दिन्ता　किटतक　धा　किटतक　ताकिट　तकधा　दिन्ता　किटतक　धा ३

आ दम देकर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीन ताल

अवधी पेशकर

\+ २
(६३) धाक्र धिता धिता क्रधान कतघिन धाकति टघिना कृतान ।

३
ताक्र तिता तिता क्रतान कतघिन धाकति टधिना क्रधान ॥

\+ २
(६४) धाक्र धिता धिता क्रधान आक्रध–आनधा धिता क्रधान ।

० ३
धाक्र धिता–आधा कृधान कतघिन धाकति टघिना कृतान ।

\+ २
ताक्र तिता तिता कृतान आक्रता–आनता तिता क्रतान ।

० ३
धाक्र धिता–आधा क्रधान कतघिन धाकति टघिना कृधान ।

\+ २
(६५) धिता धाक्र धिता धाक्र धिता कृधान आक्रध–आनधा ।

० ३
धिता आक्र धिता क्रधान कतघिन धाकति टघिना कृतान ।

\+ २
तिता ताक्र तिता ताक्र तिता क्रतान आक्रत–आनता

० ३
धिता आक्र धिता क्रधान कतघिन धाकति टधिना कृधान ॥

\+ २
(६६) धाक्र धिता धिता क्रधान आक्र धिता धिता कृधान ।

० ३
धाक्र धिता धिता क्रधान कतघिन धाकति, टघिना क्रतान ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीन ताल

\+ ताक्र तिता तिता क्रुतान २ श्राक्र तिता तिता क्रुतान ।

० धाक्र धिता धिता क्रधान ३ कतधिन धाकति टधिना क्रधान ॥

टुकड़ा बनारसी

(६७) + ति तां क तिट २ तिट ताकिट तकता किटतक ० धातू नाक–तधि न्ता ३ धाधि

न्ता धाधि–न्ता + धा श्रा श्राधि न्ता २ धाधि न्ता धाधि ० न्ता धा श्रा

श्रधि न्ता ३ धाधि न्ता धाधि न्ता ।

गत अवधी

(६८) + तकधिन तकधिन धिनतक धातिर किटतक

२ धिनधिन तक धिरधिर किटतक तक धिनतक ।

० तकतिन तकतिन तिनतक ताऽतिरकिटतक

३ धिनधिन तक धिरधिर किटतक तक धिनतक ॥

(६९) + धिनधिन तक धिरधिर किटतक धा तिर किटधा धिन ।

२ धिनधिन तक धिरधिर किटतक तक धिनतक ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीन ताल

०
तिकतिन तक तिरतिर किटतकधातिर किटता तिन ।

३
धिनधिन तक धिरधिर किटतक तक धिनतक ॥

दिल्ली बाज

\+ २ ० ३
(७०) घिन कत किट धग नधा तिट घिन तिट तकि टघि नक घिन धग नध गन तिट

किन कत किट तक नत तिट किन तिट तकि टघि नक घिन धग नध गन तिट

(७१) घि नन कत घि नन कत धागे त्रक घिन गिंन तक धिन तक धिन् नाना कता

ति नन कत ति नन कत ताक त्रक धिन गिन तक धिन तक धिन् नाना कता

(७२) घिन तिट धा घिन तिट धा घिन तक तिट क तिट क्रधा तिट धग नधा तिट

किन तिट ता किन तिट ता किन तक तिट क: तिट क्रधा किट धग नधा तिट

(७३) घिन तिट कति टघि नक घिघि नक घिन कघि नक तिट कति टघि नक तिट ता

किन तिट कति टकि नक किकि नक किन कघि नक तिट कति टघि नक तिट धा

लग्गी लखनवी

\+ २ ० ३
(७४) घिन धा घिना–श्रात घिन धा धिन गिन धग नधा–श्रात घिन धा घिन धा घिन

किन ता किना-श्रात किन ता तिन किन धग नधा-श्रात घिन धा घिन धा धिन

(७५) घिन-श्रात घिन धा धग नधा–श्रात घिन धा घिन धिन गिन धा घिन धा धिन

किन–श्रात किन ता तग नता-श्रात किन धा घिन धिन गिन धा घिन धा घिन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीन ताल

\+ २ ० ३

(७६) धिन धा धिन-आत धा धिन धा धिना-आत धा धिन गिन धा गिन धा धिन

किन ता किन-आत ता किन ता किना-आत धा धिन गिन धा धिन धा धिन

(७७) धिन धा धिना-आत धिन धा धिन गिन धा धिन धा धिना-आत धिन धिन गिन

धग नध गन धा धिन गिन धग नधा-आत धिना-आत धिन धा धिन धा धिन

किन ता किन-आत किन ता तिन किन ता किन ता किना-आत किन तिन किन

धग नध गन धा धिन गिन धग नधा-आत धिना-आत धिन धा धिना धा धिन

चक्करदार

\+ २ ०

(७८) *क्धा--आधा तूना किटतक धातिर किटतक तिरकिट तकधिर किटतक

३ +

धाति धा तिरकिट तकधिर किटतक धाति धा तिरकिट तकधिर किटतक

२ ०

धाति धा ३ नोटः— सिलसिले वार बोलों को बदलते समय ४ या ८ मात्रे का बल देदेने से क़ायदे सुन्दर हो जाते हैं।

क़ायदा आड़ा अजराड़ा

\+ २

(७९) धगन धात्रक धगन कता घेनाधे नागिना तूनाक ताकिड़ना

० ३

तकन तात्रक तकन कता घेनाधे नागिन तूनाक ताकिड़ना

(८०) धगन धात्रक धजन कता- आ कता धगन कता

घेनघे नागिना— आधे नागिना—आधे नागिन तूनाक ताकिड़ना

तकन तात्रक तकना कता — आ कता तकन कता

तिरकिट तक तातिरकिट तकिट कता घेनधे नागिना तूनाक ताकिड़ना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

\+ २

(८१) धनग धात्रक धगन कता घेनघे नागिना तूनाक ताकिड़ना

० ३

तूनाक ताकिड़ना घेनघे नागिना धगना कता धात्रक धगन

तिरतिरकिट तकतातिर किटतकता तीरकिटतक घेनघे नागिना तूनक ताकिडता

तिरकिटतक तातिरकिट तकिट कता धगन कता धात्रक धगन

नोटः—मिसिलवार क़ायदे "स्वतन्त्र वादन" में काम आते हैं,

अजराड़ा क़ायदा

\+ २

धातिर किटधा घिना धागे तिना—आधा गिना धागे,

० ३

तिना किना घातिर किटधा गिना धागे तिना किना।

तातिर किटता क्रिना ताके तिना—आता किना ताके,

तिना किना घातिर किटधा गिना धागे तिना किना

(८२) धातिर किटधा गिना धागे तिना—आधा गिना धागे,

घिना — आधा घिना— आधा गिना घागे तिना क्रिना।

नातिर किटता किना ताके तिना—आधा किना ताके,

घिना —आधा घिना— आधा गिना धागे तिना किना॥

(८३) धातिर किटधा घिना— आधा घिना धाग नधा तिरकिट,

धागे तिना— आधा तिरकिट घिना—आधा तिना क्रिना।

तातिर किटता क्रिना—आता क्रिना ताके नता तिरकिट,

धागे तिना—आधा तिरकिट घिना—आधा तिना क्रिना॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

\+ २
(८४) धिना—आधा धिना धागे धातिर किटधा गिना धागे,

० ३
नधा तिरकिट धिना—आधा तिना—आधा तिना किना ।

किना—आता किना ताके तातिर किटता किना ताके,

नधा तिरकिट धिना—आधा तिना—आधा तिना किना ॥

बल

\+ २
(८५) तिरकिट तकतिर किटतक ता तिर किटतक तिरकिट तकता तिरकिट ।

० ३
धिना गिना धातिर किटधा गिना धागे तिना किना ॥

पेशक़ार

\+ २
(८६) धाती धाधा तिना धाती धाकिड़ धाती धाधा तिना ,

० ३
तिधा किड़धा तिना धाती धाकिड़ धाती धाधा तिना ।

ताती ताता तिना ताती ताकिड़ ताती ताता तिना ,

तिधा किड़धा तिना धाती धाकिड़ धाती धाध तिना ॥

\+ २
(८७) धाधा तिना-आधा तिना धा घेघे नकघिन धाधा तिना ,

तिधा किड़धा तिना धाति—इधा धाति धाआ तिना ।

ताता तिना-आता तिना ता केके नककिन ताता तिना ,

तिधा किड़धा तिना धाति—इधा धाति धाआ तिना ॥

नोटः—सिलसिले वार बोलों को बदलते समय ४ या ८ मात्रे का बल दे देने से क़ायदे सुन्दर हो जाते हैं ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

+   २
(८८) धाती धाकिड़ धाती धाकिड़ धाती घिन घेघे नकघिन तीधा,
०   ३
किड़धा तिना धाती—इधा तिना धाती धाधा तिना।
ताती ताकिड़ ताती ताकिड़ ताती किन केके नककिन तीता,
किड़धा तिना धाती—इधा तिना धाती धाधा तिना॥

+   २
(८९) धाती धाधा तिना धाती धा घेघे नकघिन तिधा किड़धा,
०   ३
घिन घेघे नकघिन धा तिधा तिना किड़धा तिधा तिना।
ताती ताता तिना ताती ता केके नककिन तीता किड़ता,
घिन घेघे नकघिन धा तिधा तिना किड़धा तिधा तीना॥

गत

०
(९०) तिरकिट तातर धि तिरकिट तक तिधा किड़नग तिरकिट,
३
धा तिरकिट तक किड़धा तिधा तिना।

(नोटः—यह दोनों क़ायदे उस्ताद सम्मू खां के शिष्य श्री पं० बनवारीलाल मेरठ निवासी से सप्रेम प्राप्त हुवे।)

सर्पाकारी क़ायदा (अवधी)

+   २
(९१) धात्र कधि ना धिना गिना ता तिर किट,
०   ३
धात्र कधा गिना ता गिना धागे नधा त्रक।
तात्र कति ना तिना किना ता तिर किट,
धात्र कधा गिना ता गिना धागे नधा त्रक॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

९२) धात्र कधी ना धिना गिना ता आ धिना ,
गिना ता आ धिना गिना धागे नधा त्रक ।
तात्र कती ना तिना किना ता आ तिना ,
गिना ता आ धिना गिना धागे नधा त्रक ॥

(९३) गिना धागे नधा त्रक धिना गिना धात्र कधी ,
ना धिना गिना ता आ धागे नधा त्रक ।
किना ताक नता त्रक तिना किना तात्र कती ,
ना धिना गिना ता आ धागे नधा त्रक ॥

(९४) तिर किट धात्र कधा गिना ता धात्र कधा ,
गिना धागे तिना किना धिना—आधा गिना ता ।
तिर किट तात्र कता किना ता तात्र कता ,
गिना धागे तिना किना धिना—आधा गिना ता ॥

बल

(९५) तिना किड़नक तिरकिट तकतिर किटतक तिरकिट ताता तिरकिट ,
धिना गिना धात्र कधा गिना धागे नधा त्रक ।

गत आड़ा (अवधी)

\+ २
(९६) घिनक तकिट धागे तिटघड़ां घेड़नगनिट तिटघिड़नग तिरकिटतक तात्रक ,
० ३
तकिट कता घिड़नगतिट तिटघिड़नग तूनातिर किटधाती धात्रक धातूना ।
किनक तकिट ताके तेटकड़ां किड़नकतिट तिटकिड़नक तिरकिटतक तात्रक ,
तकिट कता घिड़नगतिट तिटघिड़नग तूनातिर किटधाती धात्रक धातूना ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मोहरा आड़ी

\+ २ ०

(९७) धान धिकिट धात्रक धिकिट धिरकिटतक धाड़धा दींगदीं नगन कत्त धिकिट

३ \+

क्रदध धिकिट(धिरकिटतक धाड़धा धिरकिटतक धाड़धा धिरकिटतक धाड़धा

धा ३ (श्याम लाल झांसी वालों से प्राप्त)

गत अजराड़ा

\+ २ ० ३

(९८) धग नड़-आन धागे त्रक धिन गिन ता धागे त्रक धिन गिन धागे नागे धिन ता।

धिन घेघें नक धिन घिन कधि नक धिन धागे त्रक धिन घिड़ नग धिन तूना किट ॥

तक नड़ा—आन ताके त्रक तिन किन ता ताके त्रक तिन किन ताके नाके तिन ता

धिन घिध नक धिन धिन कधि नक धिन धागे त्रक धिन घेड़ नग धिन तूना किट॥

गत फरुखाबाद

\+ २

(९९) धिन् धा धिन् धा धाधा धीं तिक्र तीतां,

० ३

तिक्र तींता तिरकिट धिन गिन धग नध गन।

धग नधा तेट धिन तिक्र तींता तीता तिरकिट,

तिक्रं तींता तिरकिट धिन गिन धग नध गन॥

\+ २ ० ३

(१००) धाति कति नान् धाग धाति कतीं नान् धिक धीना त्रक धिन गिन धग नध गन धागे

नधा त्रक धिन गिन कता तिन कता कता तिन त्रक धिन गिन धग नध गन धागे

बनारसी टुकड़ा फर्दनुमा।

\+ २ ०

(१०१) धा तेट धागेतेट क्रधाकेट धागेतेट धगनत किटधागे तटेक्रधा तेटतेट धातेटधा

तेटधागे दीनदीन् तेटतेट कत्धा आनधा कत् तीरकीट तकधीरकिटतक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(१०२) तीरकीट तकता–धिनतेट धाक्रधा-श्रानकत दींदीं नावातेट धिनतेट

धिनातूना तीरकीटतकतीर कीटतक तीरकीट दीन्तड़ा श्रानकत् कतक्रधा तेटतागे

तीरकीट तकता गेधीरकीटतक

टुकड़ा

(१०३) कते टेधा तेट धागे तेट (क्रधा-श्रान कत धा ३

दूसरा

\+ २ ०

(१०४) धा धिन धग नतीर किटतक कड़ान् तूना किड़नक तीरकीट तकधीर काटतक

३ +

घेड़नग्न (तीरकीट तकता तीरकीट घातीर कटिधा धिन धा ३

तीसरा

\+ २ ० ३

(१०५) धा धिना तूना कत् क्रधा धा तूना कत् धा श्राधा तूना कत् धा कत् धा कत्

पूर्वीय गतें

\+ २

(१०६) धिना धात्र कता धिना धात्र कता धिना तूना ।

० ३

किना तात्र कता किना धात्र कता धिना तूना ।।

(१०७) धात्र कता धिना धात्र कधि नत धिना तूना ।

तात्र कता किना नात्र कधि नक धिना तूना ।।

(१०८) धिना तूना धात्र कधा धिना धिना तधा तूना ।

किना तूना तात्र कधा धिना धिना घधा तूना ।।

(१०९) तूना धिना धात्र कधा त्रक धाधि नधा धिना ।

तूना किना तात्र कता धिन धाधि नधा धिना ।।

मोनीलाल "निझार" से प्राप्त

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीन ताल--

भिन्न प्रकार की गतें

	+				२				
(११०)	ताके	टधा	त्रक	धिट	धिट	कत	कधि	नक	,
	० धग	नति	नक	धिट	३ धिरधिर	किटतक	तातिर	किटतक	।
	तकि	टता	त्रक	तिट	तिट	कत	कति	नक	,
	धग	नधि	नक	धिट	धिरधिर	किटतक	तातिर	किटतक	॥
(१११)	नग	नत	किट	घिन	धग	नधा—आड़		घिन	,
	धिर	घेघे	नक	घिन	धिरधिर	किटतक	तातिर	किटतक	।
	नक	नत	किट	किन	तक	नता—आड़		किन	,
	धिर	घेघे	नक	घिन	धिरधिर	किटतक	तातिर	किटतक	॥
(११२)	धग	नति	नक	धिट	तकि	टधा	त्रक	धिट	,
	धिट	कत	कधि	नक	धिरधिर	किटतक	तातिर	किटतक	।
	तक	नति	नक	तिट	तकि	टधा	त्रक	तिट	,
	धिट	कत	कधि	नक	धिरधिर	किटतक	तातिर	किटतक	॥
(११३)	धिल	ड़धि	किट	धिल	ड़धा	ड़धा	ड़धा	तिधा	,
	कधा	ड़धा	ड़धा	तिधा	धिरधिर	किटतक	तातिर	किटतक	।
	तिल	ड़ती	किट	तिल	ड़ता	ड़ता	ड़ता	तीता	,
	कधा	ड़धा	ड़धा	तिधा	धिरधिर	किटतक	तातिर	किटतक	॥

मोहरा

(११४) धागेतेट तागेतेट धा कतिटक तिटकत् (तड़न्न नाधा घिंतिरकिटतक ताकत्३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीन ताल— **पेशक़ार**

\+ २
(११५) धा कता धिना तूना क्धी धा घिना तूना ,
० ३
किड़ना किटतक ताता किड़नक धिट धग नध गन ।
ता कता किना तूना क्ति ता किना तूना ,
किड़ना किटतक ताता किड़नक धिट धग नध गन ॥

(११६) घिना तूना क्धि धा घिना तूना धा कता ,
किड़ना किटतक ताता किड़नक धिट धग नध गन ।
किना तूना क्ति ता किना तूना ता कता ,
किड़ना किटतक ताता किड़नक धिट धग नध गन ॥

(११७) क्धि धा घिना तूना धा कता घिना तूना ,
किड़ना किटतक ताता किड़नक धिट धग नध गन ।
क्ति ता किना तूना ता कता किना तूना ,
किड़ना किटतक ताता किड़नक धिट धग नध गन ॥

(११८) घिना तूना किड़ना किटतक धा कता क्धि धा ,
धा धिना तूना कता धिट धग नध गन ।
किना तूना किड़ना किटतक ता कता क्ति ता ,
धा घिना तूना कता धिट धग नध धन ,

नोटः—उक्त पेशक़ार "रेडियो कलाकार" श्री राधा वल्लभ चतुर्वेदी से प्राप्त हुआ है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीन ताल— **टुकड़ा**

(११९) कत्तिट कतिरकिटतक कड़ान् ककतक कत्तघि किटकत कात्रकिटघी किटकत
धाकत घा कतिर किटघिकिट कतधा कतधा कातिरकिटघी किटकत
धाकत धा

नव्वहक्का (त्रिपल्ली)

(१२०)*धान घिकिट धात्रक धिकिट कत्त धिकिट घेघे नड़ान् फत्तेटे
घिघितेट धातिरकिटधा तेटेकत धिरधिर घिड़नग धातिरकिड़नग
तक्कड़ान् तक्कड़ान् धाकत् धिरधिरधिड़नग धातिरकिड़नक तक्कड़ान्
तक्कड़ान् धाकत् धिरधिरधिड़नग धातिरकिड़नक तक्कड़ान् तक्कड़ान्
धा ३ (नोटः—तीन बार उपरोक्त फूल से वजायें)

(नव्वहक्का का पहला 'धा' सम पर, फिर पाचवाँ "धा" समपर पुनः नवां "धा" सम पर आता है, इस रीति नौ "धा" पूरे हो गये, चक्करदार में इसकी स्वतन्त्रता है)

गत (मिश्र जाति में)

(१२१) धात्रक धिनगिन धगन धागेतेटे घिनत किटधिन गिनध गिनता,
तात्रक तिनकिन तक्न ताकतेट घिनत किटधिन गिनध गिनधा।

(१२२)
धातिरकिट तकधिरकिटतक धाधिड़नग धागे त्रक घिनत किट तिरकिट धगेन धगेनता
तातिरकिट तकतिरकिटतक ताकिड़नग ताके त्रक घिन त किटतिरकिट धगेन धगेनधा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीन ताल

मोहरा

\+ २ ०

(१२६) धिना क्रधा आन घिना घाते टेधा घिना तूना तघड़-आन्ता धीरधीर किटतक

३ +

(तीरकट तकधीर कीटतक धाती धाकड़-आन धा ३

अवधी फूलझड़ी

\+ २

(१२७) धग नधा तिरकिट धागे तिरकिट धाति-इधा तिरकिट

० ३

धाति-इधा तिरकिट धागे नधा तिरकिट धागे तिरकिट

तक नता तिरकीट ताके तिरकिट ताति-इत्ता तिरकिट

धाति-इधा तिरकिट धागे नधा तिरकटि धागे तिरकिट

(१२८) धातिर किटधा गन धा धग नध गन तिरकटि

धाति-इधा तिरकिट धाति धातिर कटिधा तिघा तिरकटि

तातिर किटत कन ता तक नत केन तिरकिट

धाति-इधा तिरकिट धाति धातिर कटिधा तिधा तिरकिट

(१२९) तिधा तिरकिट धग नधा तिधा तिरकिट धग नधा

तिरकिट धग नधा तिरकिट धागे तिधा तिधा तिरकिट

तिता तिरकिट तक नता तिता तिरकिट तक नता

तिरकिट धग नधा तिरकिट धागे तिधा तिधा तिरकिट

(१३०) धागे तिधा तिधा तिरकिट तिधा तिरकिट धागे तिरकिट

धातिर किटधा गन धागे तिरकिट धग नधा तिरकिट

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ताके तिता तिता तिरकिट तिता तिरकिट ताके तिरकिट

धातिर कटिधा गन धागे तिरकिट धग नधा तिरकिट

(१३१) धातिर किटधा गन धाति धातिर किट धा गन धाति

धाति-इधा तिरकिट धग नधा तिरकिट धातिर किटता

तातिर किटता कन ताती तातिर किटत कन ताति

धाति-इधा तिरकिट धग नधा तिरकिट धातिर किटधा

\+ २

(१३२) धागे त्रीकिट धग नधा तिरकिट धाति धातिर किटधा

० ३ +

तिधा तिरकिट (धग नधा तिरकिट धग नव गन धा ३

(इसकी एक एक अदा निराली है)

मोहरा झूलनालय

\+ २ ०

(१३३) तिरकिटता गिनकत कटित घिनधा धगन धागेतेट कतग दीनता दीनत (नानानाना

३

तिरकिटतक धिरधिरकिटतक तिरकिटतक धिरधिरकिटतक तिरकिटतक

\+

धिरधिरकिटतक धात ३

दूसरा झूलना लय

\+ २

(१३४) धिरकिटतक धेः धेः धाटिक धाधाटिट धाकिटतक धुमकिटकतान

०

(नगधेः धिरधिरकिटतक धात धा ३ वे दम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उठान

(१३५) + कतकत् तिटतिट कातिरकिटतक २ तिरकिटघड़ान् धातिरकिटतक तातिरकिटतक

० धिरधिरकिटतक तघ्ड़ान्तक् धा | धिरधिरकिटतक तघ्ड़ान्तक धा ३ बेदम

बनारसी टुकड़ा

(१३६) + धाधा दिनदिन् नाना तेटतेट २ कातिरकिटधा | तेटकत धाकत

० धाकत धा ३

मोहरा आड़ी

(१३७) + तगन धतेट धितेट तगन २ तगदि गता घेघते टघेघे ० दिंदिं दिन्

| कतक तकत ३ कात्रक धिकिट कतग दिगन धा३ (कृधान दम देकर)

दूसरी

(१३८) + तकिट तकिट धात्रक धकिट २ धिन्न ड़ान धा तूना ० कत्

| कत्रक धिकिट कता कत्रक धिकिट कतग दिगन धा ३

मुखड़ा बनारसी

(१३९) + धिरधिर किटतक ता धिरधिर २ किटतक ता धिरधिर किटतक ० ता धेः

ता—आ ३ धिरधिर किटतक ता | धिन + तातित ना तातित ना धा ३

दूसरा

(१४०) तिरकिट धेः तिरकिट धेः धिरधिर किटतक धिरधिर किटतक धिरधिर

किटतक धातिर किटतक (धिरधिर किटतक धा कड़ान् धा क धा ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

झप ताल— **प्रनामी**

\+ २

(१४१) कत् कत् तेट तेट कत कत् तेट तेट कात्रधकू तेटकत गदिगन

० ३

कत् कत् गदिगन कत् कत् भ्रिघिन्त किटधा भ्रिघिन्त किटधा

\+

धिरधिर किटतक तकिटधा धिरधिर किटतक तकिटधा { कड़ान्

२

घड़ान् प्रणाम् कत् धा ३

नोटः—"कत् कत्" ताली बजाकर निकाले पूरे बोल में जहां जहां भी हो, "भ्रिघिन्" दोनों हाथों से बायें पर, कड़ान् दोनों हाथों से दाहिने पर, घड़ान् दोनों हाथों से बायें पर, "प्रणाम" हाथ जोड़कर, पुनः "कत्त" ताली से, इसके अतिरिक्त सभी अक्षर पूर्ववत् बजेंगे ? जय सियाराम !

झपताल १० मात्रा

	सम		ताली			खाली		ताली		
	+	|	२	|	|	०	|	३	|	|
(१)	धि	ना	धि	धि	ना	क	ता	धि	धि	ना

प्रस्तार

	+		२			०		३		
(२)	धिन्	धागे	तिरकिट	धिंधा	तिरकिट	तिन्	ताके	तिरकिट	धिंधा	तिरकिट
(३)	धिना	धित्रक	धिना	तूना	कता	तूना	कता	त्रकधि	नाधि	धिना
(४)	धिना	धित्रक	धिंधि	नाधि	धिना	नाऽ	ता तू	नाक	ताधि	धिना
(५)	नाधि	धिना	कता	धिंधि	नातू	नाक	ताधि	धिना	त्रकधि	नाधि
(६)	धिंधि	नाना	कता	तूना	कता	धित्रक	धिना	धिंधि	नाधि	धिना

मुखड़ा

\+ २ ० ३ +

(७) तक तूना किटतक ता तिरकिट तकतिर किटतक तिरकिट धा आ तिरकिट

२ ० ३ +

तकतिर किटतक तिरकिट धा आ तिरकिट तकतिर किटतक तिरकिट धा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

झपताल—

पेशकार गुम्बद

\+ २ ० ३

(८) घिन धा धात्र कधि नग धाति धा घिना—श्रात धा ।

किन ता तात्र कति नक धाति धा घिना—श्रात धा ॥

(९) धात्र कधि नग धाति धा घिना—श्रात धा घिन धा ।

तात्र कति नक ताति ता घिना—श्रात धा घिन धा ॥

(१०) घिना—श्रात धा धाति धा धात्र कधि नग घिन धा ।

किना—श्रात ता ताति ता धात्र कधि नग घिन धा ॥

(११ धा धाति धा धात्र कधि नग घिन धा घिना-श्रात ।

ता ताति ता तात्र कति नक घिन घा घिना-श्रात ॥

(१२) धा धिना—-श्रात धात्र कधि नग धा घिन धा धाति ।

ता किना—-श्रात तात्र कति नक धा घिन धा धाति ॥

तोड़ा

(१३) [ता कत् घिनात धा घिना श्रातधा घिनात धा ३

मोहरा श्राड़ी

\+ २ ० ३

(१४) धा क्रिटतकतक तकतकतक धातिट तातिट तिटति टधा तिरकिटतक ता

\+ २ ०

घेड़नगतिट तिटघिड़नग दिन्तिरकिट तकिटतान तातान तातान ताक्

३ +

धान्धान् धाक्धान् धान्धाक् धान्धान् धा

मोहरा श्राड़ी

\+ २ ० ३ +

(१५) धगन धात्रक घिनात्र कधिना धात्रक धिनग धा धिनग धा धिनग धा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

· CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

झपताल

रेला

\+ २ ० ३
(१६) धा तिर किट तक घा तिर घिड़ नग तिर किट
ता तिर किट तक घा तिर घिड़ नग तिर किट

(१७) तिर किट धा तिर किट तक धा तिर घिड़ नग
तिर किट ता तिर किट तक धा तिर घिड़ नग

(१८)

धातिर घिड़टग तिरकिट धातिर घिड़नग तिरकिट धातिर किटता घिड़नग किरकिट
तातिर किड़नक तिरकिट तातिर किड़नक तिरकिट धातिर किटता घिड़नग तिरकिट

(१९)

रेला तिहाइ दार

\+ २ ० ३
धातिर किटता घिन धातिर किटता घिन धातिर किटता घिड़नग तिरकिट
धा धातिर किटता घिड़नग तिरकिट धा धातिर किटता घिड़नग तिरकिट

(२०)

मोहरा

\+ २ ० ३
दिनुदिन् नगतेट कतगद्दी आधागे तेटकधा आनकत धाकधा आनकत धाकधा आनकत

(२१)

रेला

\+ २ ० ३
धा तिर घिड़ नग तिर किट धा तिर घिड़ नग

\+ २ ० ३
ता तिर किड़ नक तिर किट धा तिर घिड़ नग

आड़ी गतें

\+ २
(२२) धातिरघिड़ नगतिरकिट धातिरघिड़ नगतिरकिट तकधिनगिन

० ३
तातिरकिट तकतिरकिट धातिरघिड़ नगतिरकिट तकधिनगिन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

झपताल

(२३) धातिरघिड़, नगतिरकिट तकधिनगिन धातिरघिड़ नगतिरकिट

तातिरकिड़ नकतिरकिट तकधीनगिन धातिरघिड़ नगतिरकिट

(२४) धातिरघिड़ नगतिरकिट धिड़नगतिर किटघिड़नग तकधिनगिन

तातिरकिड़ नकतिरकिट किड़तकतिर किटघिड़नग तकधिनगिन

(२५) धातिरघिड़ नगधातिर घिड़नगधा तिरकिटतक तकधिनगिन

तातिरकिड़ तकतातिर किड़नकता तिरकिटतक तकधिनगिन

मुखड़ा आड़ी

\+ २ ०

(२६) ताकेतू नाकिटतक तिरकिटतक तातिरकिट किड़तकतू नाकिटतक

३

तिरकिटतिक धिरकिटतक धाति धाति

पेशकार

\+ २ ० ३

(२७) धिक्र घिधा-आधा तिरकिट धाक्र धाधि आधा घिधा धिन्ता कता

तीक्र तिता-आता तिरकिट ताक्र तांति आधा घिधा धिनता कता

(२८) धिन्ता कता धिक्र घिधा-आधा तिरकिट धाक्र धाधि आधा घिधा

तिन्ता कता तिक्र तिता-आता तिरकिट धाक्र धाधि आधा घिधा

(२९) तिरकिट धिन्ता कता धाक्र धाधि-आधा घिधा धींक्र घिधा -आधा

तिक्रट तिन्ता कता ताक्र तांति आधा घिधा धिक्र धिन्धा आधा

मोहरा

\+ २ ० ३ +

(३१) कते टेधा तेट धागे तेट कृधा तेट कृधा तेट { कृधा आन

कत धा ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तांतां

एकताल

(३२) धात्र कधि नग धाति धा धत्र कधि नग धति धग नधा—श्रात धिन धग

नध गन धा धिन तूना कता { तात्र कति नक ताति ता‌‌ऽतात्र कति नक

धाति धग नधा—श्रात धिन धग नध गन धा धिन तूना कता

तोड़ा

(३३) तिरकिट तकधिर किटतक धातिर किटतक ।

धिरकिट तकधा तिरकिट तकधिर किटतक धा ॥

एक ताल १२ मात्रा

	सम		खाली		ताली		खाली		ताली		ताली	
	+		०		२		०		३		४	
(१)	धिन्	धिन्	धागे	तिरकिट	तू	ना	क	ता	धागे	तिरकिट	धि	नाना

द्रुत ठेका

(२) धि त्रक धि ना धिं धिं ना त्रक तू ना क ता

मोहरा

(३) धातिर किटतक तातिर किटतक तिरकिट तकधिर किटतक { कुधा तेट

कुधा—श्रान कत धा ३

मुखड़ा

(४) कत् तिरकिट तकधिर किटतक धा श्रा—श्रधिर किटतक धाधिर

किटतक धाधिर किटतक धा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एकताल—

गुम्बद

\+ ० २

(५) धा तिट तिट धा धा तिट घिन धा घिन धा घिनतिट ।

० ३ ४

घिनघिन—अततिट तिट धा तिट ता तिट धा घिनाड़ ॥

ता तिट तिट ता ता तिट किन ता किन ता किनतिट ।

घिनघिन—अततिट तिट धा तिट ता तिट धा घिनाड़ ॥

(६) धा घिन धा घिन धा घिन—आत धा धा तिट धा घिन ।

धां तिट ता तिट धा घिन—आत धा घिनघेघे नकघिन ॥

ता किन ता किन ता किना-आत ता ता तिट ता किन ।

धा तिट ता तिट धा घिन—अत धा घिनघेघ नकघिन ॥

(७) घिन धा घिनघिन धा घिन धा घिन धा घिन घिन धा ।

धा धा घिन धा धा धा घिन धा धा धा घिन धा ॥

किन ता किनकिन ता किन ता किन ता किन किन ता ।

धा धा घिन धा धा धा घिन धा धा धा घिन धा ॥

अवधी चलन

\+ ० २ ० ३ ४

(८) धग नध तिट घिन तेट घिन घिना—आत किट घिघि नक घिन ।

तक नत तिट किन तिट किन घिना-अ.त किट घिघि नक घिन ॥

(९) धग नध तिट घिन तिट घिन धग नध तिट घिन तिट घिन ।

धग नध तिट घिन तिट घिन घिना—आत किट घिघि नक घिन ॥

नोटः—जिन बोलो पर ताल चिन्ह न हों उन्हें गिनकर बैठालें। मात्रा विभवित कर दी गई है, अस्तु भ्रम में न पड़ें।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एकताल—

तक नत तिट किन तिट किन तक्र नत किट किन तिट किन ।

धग नध तिट घिन तिट घिन घिना—आत किट घिघि नक घिन ॥

(१०) धा घिघि नक घिन घिन कधि नक घिन धा घिन तिट घिन ।

घिन तिट घिन धग नध तिट धा घिन तिट धा घिन तिट ॥

ता किटतक तिना तिक्र तिना किड़नक तिरकिट तकता ता किन किट किन ।

घिन तिट घिन धग नध तिट धा घिन तिट धा घिन तिट ॥

बलदार अजराड़ा बाज

\+ ० २ ० ३ ४

(११) धात्र कधा घिना-आधा घिना धागे तिना-आधा घिना धागे तिना किड़नक ।

आतिर किटतक तिना-आतिर किटतक तिरकिट तकता घिना घिना धागे तिना किना ।

मोहरा

\+ ० २

(१२) धाक्र घिना किड़नाकिटतक ताताकिटतक तकड़ान्ता तिरकिटतकता

० ३ ४

कत्तिरकिट तकधिरकिटतक धा तिरकिट तकधिरकिटक धा तिरकिट तकधिरकिटतक

(१३) रेला आड़ (अवधी)

\+ ० २ ३ ४

धाधि न्ना घिड़न गनग तिरकि टतक घिड़न गनग तिरकि टतक तकधि नगिन ।

ताति न्ना किड़न कनक तिरकि टतक घिड़न गनग तिरकि टतक तकधि नगिन ।

मुखड़ा ७ मात्रा से

० ३ ४

(१४) धिरधिर किटतक तातिर किटतक तकड़-आन्तक्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रूपक—

मोहरा ३ मात्रा से

०　२　०　३

(१५) ताक्ता आनता कृतान किड़नाकिटतक ताताकिटतक धा किड़ना किटतकताता

४　+

किटतकधा किड़नकिटतक ताताकिटतक धा

मोहरा

+　०　२　०　३　४

(१६) धः धः धेट तेट घिरधिर किटतक तातिर किटतक तकड़–आन्धा अधिर

+　०　२　०　३

किटतक धा तिरकिट तकड़–आनधा आधरि किटतक धा तिरकिट तकड़–

४　+

आन्धा–आधिर किटतक धा

रूपक ७ मात्रा

रूपक ताल का कुछ ऐसा नियम है, कि इसके सम स्थान (पांचवी मात्रा) पर खाली दिखाते हैं।

ठेका

खाली (सम)　ताली　ताली

०　|　|　१　|　२　|

(१) तिन ता त्रक धिन् धिन् धागे त्रक

बदला हुआ

(२) तिन् ति नन् धि नना धि नन्

(३) तिन् त्रक धिं ना धिं धिं ना

(४) तिन् ताता तिन्तिन् ताता धग नधा तिरकिट

मुखड़ा

०　१　२

(५) कुध-आन-धा नाना तिरकिट तकधिर फिटतक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लग्गी

\+ १ २
(६) धातिर घिड़नग तिरकिट धग नधा घिना तिरकिट
तातिर किड़नक तिरकिट धग नधा धिना तिरकिट

(७) धातिर घिना तिरकिट धग नधा घिड़नग तिरकिट
तातिर किना तिरकिट धग नधा धिड़नग तिरकिट

(८) तिरकिट धातिर धिड़नग तिरकिट धग नधा घिना
तिरकिट तातिर किड़नक तिरकिट धग नधा घिना

(९) घिना धग नधा तिरकिट तातिर घिड़नग तिरकिट
किना तक नता तिरकिट धातिर घिड़नग तिरकिट

(१०) तिरकिट तातिर धिड़नग तिरकिट घिना धग नधा
गिना धा आधा गिना धा-आधा घिन

मोहरा

० १ २ ० १
(११) तेट तां तेट तां तूना किटतक तातिर किटतक ताकिट तकधा दिन्ना किटतक
२ ० १ २
कड़ान् किटतक तूना किटतक ताकिट | तकधा दिन्ना किटतक धा ३

दूसरा

० १ २
(१२) कत्तिट कत्तिट कृधातेट कृधातेट धागदिन नागतेट कत्तिटक
तिटकत कतकृधा—आनकत धाकृधा—आनकत धाकृधा आनकत

बलदार पेशकार

० १ २
(१३) धाड़ धाति धाकृ धाड़ धाड़ धाति किड़नक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दादरा

तिरकिट तकतिर किटतक ताड़ घाड़ धाति धा (बजाने में शब्दों को बल देकर बदलता रहे)

(१४) धिन धा धिना ग्रात धा धिन धा धिना-ग्रात धा धिन धा धिन धा

किड़नक तान्त्रक तिनकिट तिरकिट ना किट ता धिना-ग्रात धा धिन धा धिन धा

तिहाई

(१५) घिनधा घिनात धाघिन धाघिना तधा घिनधा घिनात

ग्राड़ी

(१६) कत्त धिकिट तकिट थुकिट धगन नगन धग्गे

दिगन [धात्रक धगन धिट कृधान धिट कृधान धा ३

नोट :—इन बोलों को 'तेवरा' में भी बजाना उचित होगा, यदपि तेवरा के अन्तर्गत तेवरा ठेका से ही यह सिद्धान्त प्रकट होता है, कि मिसलीवाद बजाना (पेशकार लगी बाँट ग्रादि जिनमें वन्द, ग्रौर खुला व्यवहार होता है।) कहां तक ठीक है, यहां गुणियों के विचारने योग्य बातें हैं। तथापि अधिकांश लोग, रूपक ग्रौर तेवरा को ठेका के ग्रतिरिक्त एक ही प्रकार से बजाते हैं। (ग्रपने राम को क्या है, यह तो गुणियों की रीझ है।)

दादरा ६ मात्रा

ठेका

(१) धा धी ना धा तू ना

बदला हुआ

(२) धाधि धाधा तूना ताति धाधा धिना

(३) धा धिन गिन धा तूना तातिन किन धा धिना

(४) धाग धिन गिन धाग तिन किन

(५) धिन गिन्न धा तिन गिन धा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0- In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दादरा

तिहाई

\+ ०

(६) कड़ान तिरकिट तकता तिरकिट धा तिरकिट

तकता तिरकिट धा तिरकिट तकता तिरकिट धा

गत

\+ ० + ०

(७) धाग घिना त्रक धाग घिन तूना ताक किना त्रक धाग घिना तूना

(८) घिड़ नग तिट तिट घिड़ नग किड़ नक तिट तिट घिड़ नग

(९) धात्र कधा घिन धाग घिना घिन तात्र कता किन धाग घिना घिन

(१०) धाग धाग त्रक धाग घिना घिन ताक धाक त्रक धाग घिना घिन

(११) धाग घिना तिरकिट घिना तिरकिट घिना ताक किना तिरकिट घिना तिरकिट घिना

रेला

\+ ०

(१२) धाधिड़ नगतिर किटतक ता किड़ नकधिर किटतक

(१३) धिरकिट तकधा किड़नक तिरकिट तकधा घिड़नग

मुखड़ा

\+ ० + ० +

(१४) धा घिन धग नधा घिना तिरकिट धा घिना तिरकिट धा घिना तिरकिट धा

(१५)

घिन धग नधा तिरघिड़ नगतिर किटतक धा घिड़ नगतिर किटतक धा घिड़ नगतिर किटतक

विलम्बित ख्याल १२

\+ ०

धिं,ति,ति,तिट । धिं,ति,ति,तिट, । धा-आक,धा,गेगे । तिं,र,कि,ट

२ ०

तू,ति,,ति,तिट । ना-आति,नाना,आना । क,कक,ति.तिट । ता, आक, तिना,तिट

३ ४

धा, आक,धा,गेगे । ति,र,कि,ट । धिं,त्रक,ति,तिट । ना,आति,नाना,आना ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

केरवा ४ मात्रा

ठेका

(१) धधिं धातू नाधा धिन

बदला हुआ

(२) धागे नतू नक धिन

(३) धाधि नधि नाक्र धिन

मुखड़ा

(४) तीरकिट तकता धिरधिर किटतक धा धा तिरकिट तकता

धिरधिर किटतक धा धा तिरकिट तकता धिरधिर किटतक

गत

(५) धात्र कधि नक धिन तात्र ककि नक धिन

(६) धिन धात्र कधि नक किन तात्र कधि नक

(७) धिन कधि नधा त्रक किन कधि नधा त्रक

(८) त्रक धिन कधि नधा त्रक किन कधि नधा

(९) धिन धातिर धिड़नक धातिर धिड़नग धात्रक कधिनक

किन तातिर किड़नक तातिर धिड़नग धात्र कधि नक

(१०) नक धिन धात्र कधि नक किन तात्र ककि

मुखड़ा

(११) तिरकिट तकता तड़क-आनतक धाकड़ा न्तक धाकड़ा-न्तक धा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

केरवा

चलन

	+		२		+		२	
(१२)	घिन	घेघे	नक	घिन	किन	केके	नक	घिन
(१३)	घेघे	नक	घिन	धा	केके	नक	किन	धा

उठान बाज बनारसी

	+		२		+		२	
(१४)	तिरकिट	तकड़	आन	तक	ताकि	नककिन	ताकेनाके	तूना कता
(१५)	धग	नतू	नक	तेट	धग	नधी	नक	धिट
(१६)	तेट	धग	नतू	नक	तेट	धग	नधि	नक
(१७)	धा	गि	ना	ना	ता	कि	ना	ना
(१८)	धा	घिन	नधि	न्ना	धा	घिन	तकि	न्न
(१९)	धाड़	धाड़	धाति	नाड़	ताड़	धाड़	घाधि	नाड़

(२०) धाति नग तांति धग

(२१) धागे गकि नक घिन

(२२) त्रक ताधि गधि नाड़ा

त्रक ताति कति नाड़ा

(३) धागे तिटि धाग नाड़

ताकि तिट धागि नाड़ा

(फिल्मी गाने के साथ बजने योग्य ठेके इसमें बांया घिसना जरूरी है।)

(२४) धा तिन् नक धिन्

(२५) घिन तकि–इट धा

(२६) घि–न्नड़–आग धाड़ा

(२७) नाधि नाना नक घिन

(२८) घिन नता–आक घिन

(२९) घेंता कत आता घेंत

नोट :—इसका ता गदेली से स्याही पर निकलेगा।

(३०) धाग घेघे नाक घेघे

(३१) धागे नागे नक घेघे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रचलित तालों के ठेके

तिलवाड़ा १६ मात्रा

\+ २ ० ३

(१) धा त्रक धिं धिं धा धा तिं तिं ता त्रक धिं धिं धा धा धिं धिं

तेवरा ७ मात्रा

\+ २ ०

धि धि ना धी त्रक धि ना (नोटः–तेवरा में खाली नहीं पड़ती है)

झूमरा १४ मात्रा

\+ २ ० ३

(२) धिं धा त्रक धिं धिं धागे त्रक तिं ता त्रक धिं धिं धागे त्रक

आड़ा चौताल १४ मात्रा

\+ २ ० ३ ० ४ ०

(३) धिं त्रक धि नां तू ना क ता त्रक धि ना धि धि ना

फरोदस्त १४ मात्रा

\+ २ ० ३

(४) धिं धिं धागे त्रक तू ना क ता धात्र कधि नग धात्र कधि नग

दीपचन्दीचाँचर १४ मात्रा

\+ २ ० ३

(५) धा धिं न् धा धा तिं न ता तीं न धा धा धिं न

जत १६ मात्रा (ठुमरी)

\+ २ ० ३

(६) धा आ धि न् धा धा तिं न् ता आ तिं न् धा धा धि न्

मत्तताल १८ मात्रा

(७)

\+ ० २ ३ ० ४ ०

धिं धिं धागे नधा त्रक धा धा तू ना क ता धागे नधा त्रक धा धा धि नन

(मत्त ताल में मतान्तर है)

लद्मी ताल (पट ताल) १८ मात्रा

\+ ० २ ३ ० ४ ५ ६ ०

(८) धि त्रक धि ना धिं धिं धा धा तू ना क ता त्रक धि ना धि धि ना

सवारी १५ मात्रा

\+ २ ० ३ ० ४

(९) धिं धिं धागे त्रक तू ना क ता धि त्रक धि ना धि धि नन्

जलद त्रिताल सितार (खानी) १६ मात्रा

\+ २ ० ३

(१०) धा धि न् धा धा धि न् धा धा तिं न् ता ता धि न् धा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

केरवा

गजल

(११) धिक धि ना धिं तिक ति ना ऽक

श्री रामार्पणमस्तु

॥ समाप्तम् ॥

पागलदास की लिखित पुस्तकें

श्री रामाभिनय (स्टेज पर खेलने योग्य बालकाण्ड का अनुवाद, सुन्दर साहित्य तथा भावनाओं से पूर्ण) अप्रकाशित

राजकुमार की भूल (एतिहासिक नाटक) ,,

उलट-पलट (दौलत का नशा) सामाजिक नाटक ,,

उत्सव विलासिका (भगवान के उत्सव में सामायिक गाने योग्य सुन्दर २ पदों का संग्रह) ,,

नये दिन (राष्ट्रीय गायन) प्रकाशित

पुस्तक प्राप्त करने का एक मात्र स्थान

श्री भगवान दास जी मृदंगाचार्य

स्थान:—(राम कचहरी भरतमिलाप) छोटी जगह

मुहल्ला:- राम कोट श्री अयोध्या जी

जि० फैजाबाद उत्तर प्रदेश

नोट :—वी० पी० द्वारा मंगाने पर डाक खर्च अलग, चार पुस्तक मंगाने डाकखर्च माफ

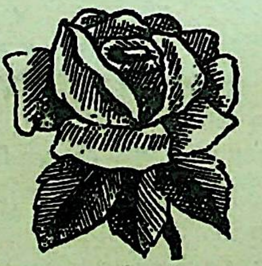

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्रा
भरतनिधि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi